قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

عَمَّ

पारा - 30

eParah

اٰيَاتُهَا: 40 — 78 سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ 80 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الَّذِىْ	الْعَظِيْمِ (2) لا	عَنِ النَّبَاِ	يَتَسَآءَلُوْنَ (1) ج	عَمَّ
वो जो	जो बहुत बड़ी है	उस ख़बर के बारे में	वो आपस में सवाल कर रहे हैं	किस चीज़ के बारे में

كَلَّا	ثُمَّ	سَيَعْلَمُوْنَ (4) لا	كَلَّا	مُخْتَلِفُوْنَ (3) ط	فِيْهِ	هُمْ
हरगिज़ नहीं	फिर	अनक़रीब वो जान लेंगे	हरगिज़ नहीं	इख़्तिलाफ़ करने वाले हैं	उसमें	वो

وَّالْجِبَالَ	مِهٰدًا (6) لا	الْاَرْضَ	نَجْعَلِ	اَلَمْ	سَيَعْلَمُوْنَ (5)
और पहाड़ों को	बिछौना	ज़मीन को	हमने बनाया	क्या नहीं	अनक़रीब वो जान लेंगे

سُبَاتًا (9) لا	نَوْمَكُمْ	وَّجَعَلْنَا	اَزْوَاجًا (8) لا	وَّخَلَقْنٰكُمْ	اَوْتَادًا (7) صلے
आराम का ज़रिया	तुम्हारी नींद को	और बनाया हमने	जोड़ा-जोड़ा	और पैदा किया हमने तुम्हें	मेख़ें

وَّبَنَيْنَا	مَعَاشًا (11) ص	النَّهَارَ	وَّجَعَلْنَا	لِبَاسًا (10) لا	الَّيْلَ	وَّجَعَلْنَا
और बनाए हमने	मआश का वक़्त	दिन को	और बनाया हमने	लिबास	रात को	और बनाया हमने

وَّاَنْزَلْنَا	وَّهَّاجًا (13) صلے	سِرَاجًا	وَّجَعَلْنَا	شِدَادًا (12) لا	سَبْعًا	فَوْقَكُمْ
और उतारा हमने	ख़ूब रौशन	एक चिराग़	और बनाया हमने	मज़बूत (आसमान)	सात	ऊपर तुम्हारे

وَّنَبَاتًا (15) لا	حَبًّا	بِهٖ	لِّنُخْرِجَ	ثَجَّاجًا (14) لا	مَآءً	مِنَ الْمُعْصِرٰتِ
और नबातात	ग़ल्ला	उससे	ताकि हम निकालें	ख़ूब बरसने वाला	पानी	बदलियों से

يَّوْمَ	مِيْقَاتًا (17) لا	كَانَ	الْفَصْلِ	يَوْمَ	اِنَّ	اَلْفَافًا (16) ط	وَّجَنّٰتٍ
जिस दिन	एक मुक़र्रर वक़्त	है	फ़ैसले का	दिन	बेशक	घने	और बाग़ात

السَّمَآءُ	وَّفُتِحَتِ	اَفْوَاجًا (18) لا	فَتَاْتُوْنَ	فِى الصُّوْرِ	يُنْفَخُ
आसमान	और खोल दिया जाएगा	फ़ौज दर फ़ौज	तो तुम आओगे	सूर में	फूंक दिया जाएगा

اِنَّ	سَرَابًا ⑳ ط	فَكَانَتْ	الْجِبَالُ	وَّسُيِّرَتِ	اَبْوَابًا ⑲ لا	فَكَانَتْ
बेशक	सराब	तो वो हो जाएंगे	पहाड़	और चला दिए जाएंगे	दरवाज़े-दरवाज़े	तो वो हो जाएगा

فِيْهَآ	لّٰبِثِيْنَ	مَاٰبًا ㉒ لا	لِّلطّٰغِيْنَ	مِرْصَادًا ㉑ صلے	كَانَتْ	جَهَنَّمَ
उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	ठिकाना	सरकशों के लिए	एक घात	है	जहन्नम

حَمِيْمًا	اِلَّا	شَرَابًا ㉔ لا	وَّلَا	بَرْدًا	فِيْهَا	لَا يَذُوْقُوْنَ	اَحْقَابًا ㉓ ج
खौलता पानी	मगर	कोई पीने की चीज़	और ना	कोई ठंडक	उसमें	ना वो चखेंगे	मुद्दतों

حِسَابًا ㉗ لا	لَا يَرْجُوْنَ	كَانُوْا	اِنَّهُمْ	وِّفَاقًا ㉖ ط	جَزَآءً	وَّغَسَّاقًا ㉕ لا
हिसाब की	ना वो उम्मीद रखते	थे वो	बेशक वो	पूरा-पूरा	बदला है	और बहती पीप

كِتٰبًا ㉙ لا	اَحْصَيْنٰهُ	شَيْءٍ	وَكُلَّ	كِذَّابًا ㉘ ط	بِاٰيٰتِنَا	وَّكَذَّبُوْا
एक किताब में	शुमार कर रखा है हमने उसे	चीज़ को	और हर	बहुत झुठलाना	हमारी आयात को	और उन्होंने झुठलाया

لِلْمُتَّقِيْنَ	اِنَّ	عَذَابًا ㉚ ع	اِلَّا	نَّزِيْدَكُمْ	فَلَنْ	فَذُوْقُوْا
मुत्तक़ी लोगों के लिए	बेशक	अज़ाब	मगर	हम ज़्यादा देंगे तुम्हें	पस हरगिज़ ना	पस चखो

ع 1 30 1

وَّكَاْسًا	اَتْرَابًا ㉝ لا	وَّكَوَاعِبَ	وَّاَعْنَابًا ㉜ لا	حَدَآئِقَ	مَفَازًا ㉛ لا
और जाम	हमउम्र	और उभरी छातियों वालियाँ	और अंगूर हैं	बाग़ात	कामयाबी है

جَزَآءً	كِذّٰبًا ㉟ ج	وَّلَا	لَغْوًا	فِيْهَا	لَا يَسْمَعُوْنَ	دِهَاقًا ㉞ ط
बदला है	कोई झूठ	और ना	कोई लग़्व	उसमें	ना वो सुनेंगे	छलकते हुए

وَمَا	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	رَّبِّ	حِسَابًا ㊱ لا	عَطَآءً	مِّنْ رَّبِّكَ
और जो	और ज़मीन का	आसमानों	जो रब है	किफ़ायत करने वाला/काफ़ी	अतिया	आपके रब की तरफ़ से

يَقُوْمُ	يَوْمَ	خِطَابًا ㊲ ج	مِنْهُ	لَا يَمْلِكُوْنَ	الرَّحْمٰنِ	بَيْنَهُمَا
खड़े होंगे	जिस दिन	बात करने के	उससे	ना वो मालिक होंगे	जो रहमान है	दर्मियान है इन दोनों के

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

اَذِنَ	مَنْ	اِلَّا	لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ	صَفًّا ۛ ؕ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ	الرُّوْحُ
इजाज़त दे	वो जो	मगर	ना वो कलाम कर सकेंगे	सफ़ दर सफ़	और फ़रिश्ते	रूहुल अमीन

فَمَنْ	الْحَقُّ ۚ	الْيَوْمُ	ذٰلِكَ	صَوَابًا ﴿38﴾	وَقَالَ	الرَّحْمٰنُ	لَهُ
पस जो कोई	बरहक़	दिन	ये है	बात दुरुस्त	और वो कहे	रहमान	उसको

عَذَابًا	اَنْذَرْنٰكُمْ	اِنَّآ	مَاٰبًا ﴿39﴾	اِلٰى رَبِّهٖ	اتَّخَذَ	شَآءَ
अज़ाब से	डरा दिया है हमने तुम्हें	बेशक हम	ठिकाना	तरफ़ अपने रब के	बना ले	चाहे

يَدٰهُ	قَدَّمَتْ	مَا	الْمَرْءُ	يَنْظُرُ	يَّوْمَ	قَرِيْبًا ۖۚ
उसके दोनों हाथों ने	आगे भेजा	जो	इंसान	देखेगा	जिस दिन	क़रीब के

ع 2 10 2

تُرٰبًا ﴿40﴾ ع	كُنْتُ	يٰلَيْتَنِيْ	الْكٰفِرُ	وَيَقُوْلُ
मिट्टी	होता मैं	ऐ काश कि मैं	काफ़िर	और कहेगा

رُكُوْعَاتُهَا: 2 — 81 سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ 79 — اٰيَاتُهَا: 46

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَشْطًا ﴿2﴾ لا	وَّالنّٰشِطٰتِ	غَرْقًا ﴿1﴾ لا	وَالنّٰزِعٰتِ
आसानी से निकालना	और जो आसानी से निकालने वाले हैं	डूब कर	क़सम है (उन फ़रिश्तों की) जो खींचने वाले हैं

فَالْمُدَبِّرٰتِ	سَبْقًا ﴿4﴾ لا	فَالسّٰبِقٰتِ	سَبْحًا ﴿3﴾ لا	وَّالسّٰبِحٰتِ
फिर जो तदबीर करने वाले हैं	सबक़त करना	फिर जो सबक़त करने वाले हैं	तेज़ी से तैरना	और जो तैरने वाले हैं

وقف لازم

الرَّادِفَةُ ﴿7﴾ ط	تَتْبَعُهَا	الرَّاجِفَةُ ﴿6﴾ لا	تَرْجُفُ	يَوْمَ	اَمْرًا ﴿5﴾
पीछे आने वाली	पीछे आएगी उसके	काँपने वाली	काँपेगी	जिस दिन	किसी काम की

وقف لازم

يَقُوْلُوْنَ	خَاشِعَةٌ ﴿9﴾	اَبْصَارُهَا	وَّاجِفَةٌ ﴿8﴾ لا	يَّوْمَئِذٍ	قُلُوْبٌ
वो कहते हैं	झुकी हुई होंगी	निगाहें उनकी	धड़कने वाले होंगे	उस दिन	कुछ दिल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ءَاِنَّا	لَمَرْدُوْدُوْنَ	فِى الْحَافِرَةِ (10) ط	ءَاِذَا	كُنَّا	عِظَامًا
क्या बेशक हम	अलबत्ता फेरे जाने वाले हैं	पहली हालत में	क्या जब	होंगे हम	हड्डियां

وقف لازم

نَّخِرَةً (11) ط	قَالُوْا	تِلْكَ	اِذًا	كَرَّةٌ	خَاسِرَةٌ (12)	فَاِنَّمَا	هِىَ
बोसीदा	उन्होंने कहा	ये	तब	वापसी है	ख़सारे की	तो बेशक	वो

زَجْرَةٌ	وَّاحِدَةٌ (13) لا	فَاِذَا	هُمْ	بِالسَّاهِرَةِ (14) ط	هَلْ	اَتٰىكَ	حَدِيْثُ
डांट होगी	एक ही	तो अचानक	वो	मैदान में होंगे	क्या	आई है आपके पास	ख़बर

وقف لازم

مُوْسٰى (15)	اِذْ	نَادٰىهُ	رَبُّهٗ	بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ	طُوًى (16) ج	اِذْهَبْ
मूसा की	जब	पुकारा उसे	उसके रब ने	मुक़द्दस वादी में	तुवा की	जाओ

اِلٰى فِرْعَوْنَ	اِنَّهٗ	طَغٰى (17) ز	فَقُلْ	هَلْ	لَّكَ	اِلٰٓى اَنْ
तरफ़ फ़िरऔन के	बेशक वो	सरकश हो गया है	पस कहो	क्या है	तुझे (ख़्वाहिश)	तरफ़ उसके कि

تَزَكّٰى (18) لا	وَاَهْدِيَكَ	اِلٰى رَبِّكَ	فَتَخْشٰى (19) ج	فَاَرٰىهُ	الْاٰيَةَ
तू पाक हो जाए	और मैं रहनुमाई करू तेरी	तरफ़ तेरे रब के	फिर तू डरे	पस उसने दिखाई उसे	निशानी

الْكُبْرٰى (20) ز	فَكَذَّبَ	وَعَصٰى (21) ز	ثُمَّ	اَدْبَرَ	يَسْعٰى (22) ز	فَحَشَرَ
बहुत बड़ी	तो उसने झुठला दिया	और उसने नाफ़रमानी की	फिर	वो पलटा	कोशिश करते हुए	फिर उसने इकट्ठा किया

فَنَادٰى (23) ز	فَقَالَ	اَنَا	رَبُّكُمُ	الْاَعْلٰى (24) ز	فَاَخَذَهُ	اللّٰهُ	نَكَالَ
फिर उसने पुकारा	फिर उसने कहा	मैं	रब हूं तुम्हारा	सब से बुलंद	तो पकड़ लिया उसे	अल्लाह ने	अज़ाब में

ع 1 26 3

الْاٰخِرَةِ	وَالْاُوْلٰى (25) ط	اِنَّ	فِىْ ذٰلِكَ	لَعِبْرَةً	لِّمَنْ	يَّخْشٰى (26) ع
आख़िरत	और दुनिया के	बेशक	इसमें	यक़ीनन इबरत है	उसके लिए जो	डरता हो

ءَاَنْتُمْ	اَشَدُّ	خَلْقًا	اَمِ	السَّمَآءُ ط	بَنٰىهَا (27) وقفة	رَفَعَ	سَمْكَهَا
क्या तुम	ज़्यादा सख़्त हो	तख़लीक़ में	या	आसमान	उसने बनाया उसे	उसने बुलंद किया	उसकी छत को

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَسَوّٰىهَا ﴿28﴾	وَاَغْطَشَ	لَيْلَهَا	وَاَخْرَجَ	ضُحٰىهَا ﴿29﴾	وَالْاَرْضَ
फिर उसने दुरुस्त कर दिया उसे	और उसने तारीक किया	उसकी रात को	और उसने निकाला	उसकी धूप को	और ज़मीन को

بَعْدَ	ذٰلِكَ	دَحٰىهَا ﴿30﴾	اَخْرَجَ	مِنْهَا	مَآءَهَا	وَمَرْعٰىهَا ﴿31﴾
बाद	इसके	उसने फैला दिया उसे	उसने निकाला	उस से	पानी उसका	और चारा उसका

وَالْجِبَالَ	اَرْسٰىهَا ﴿32﴾	مَتَاعًا	لَّكُمْ	وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿33﴾	فَاِذَا
और पहाड़ों को	उसने गाड़ दिया उन्हें	फ़ायदे का सामान है	तुम्हारे लिए	और तुम्हारे मवेशियों के लिए	फिर जब

جَآءَتِ	الطَّآمَّةُ	الْكُبْرٰى ﴿34﴾	يَوْمَ	يَتَذَكَّرُ	الْاِنْسَانُ	مَا	سَعٰى ﴿35﴾
आ जाएगी	आफ़त	बहुत बड़ी	उस दिन	याद करेगा	इन्सान	जो	उसने कोशिश की

وَبُرِّزَتِ	الْجَحِيْمُ	لِمَنْ	يَّرٰى ﴿36﴾	فَاَمَّا	مَنْ	طَغٰى ﴿37﴾
और ज़ाहिर कर दी जाएगी	जहन्नम	उसके लिए जो	देखता है	तो रहा वो	जिसने	सरकशी की

وَاٰثَرَ	الْحَيٰوةَ	الدُّنْيَا ﴿38﴾	فَاِنَّ	الْجَحِيْمَ	هِيَ	الْمَاْوٰى ﴿39﴾	وَاَمَّا
और उसने तरजीह दी	ज़िंदगी को	दुनिया की	तो बेशक	जहन्नम	वो ही	ठिकाना है (उसका)	और रहा

مَنْ	خَافَ	مَقَامَ	رَبِّهٖ	وَنَهَى	النَّفْسَ	عَنِ الْهَوٰى ﴿40﴾
वो जो	डरा	खड़े होने से	अपने रब के (सामने)	और उसने रोक लिया	नफ़्स को	ख़्वाहिशात से

فَاِنَّ	الْجَنَّةَ	هِيَ	الْمَاْوٰى ﴿41﴾	يَسْـَٔلُوْنَكَ	عَنِ السَّاعَةِ
तो यक़ीनन	जन्नत	वो ही	ठिकाना है (उसका)	वो सवाल करते हैं आपसे	क़यामत के बारे में

اَيَّانَ	مُرْسٰىهَا ﴿42﴾	فِيْمَ	اَنْتَ	مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿43﴾	اِلٰى رَبِّكَ
कब है	ठहरना उसका	किस (फ़िक्र) में हैं	आप	उसके ज़िक्र से	तरफ़ आपके रब के

مُنْتَهٰىهَا ﴿44﴾	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مُنْذِرُ	مَنْ	يَّخْشٰىهَا ﴿45﴾	كَاَنَّهُمْ
इंतिहा है उसकी	बेशक	आप तो	डराने वाले हैं	उसे जो	डरता हो उससे	गोया कि वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 2 20 4

يَوْمَ	يَرَوْنَهَا	لَمْ	يَلْبَثُوْٓا	اِلَّا	عَشِيَّةً	اَوْ	ضُحٰهَا ع 46
जिस दिन	वो देखेंगे उसे (तो कहेंगे)	नहीं	वो ठहरे	मगर	पिछला पहर	या	पहला पहर उसका

آيَاتُهَا: 42 — 80 سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ 24 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ	وَتَوَلّٰٓى ۙ 1	اَنْ	جَآءَهُ	الْاَعْمٰى ؕ 2	وَمَا	يُدْرِيْكَ
उसने तेवरी चढ़ाई	और उसने मुंह फेर लिया	कि	आया उसके पास	एक नाबीना	और क्या चीज़	बताए आपको

لَعَلَّهٗ	يَزَّكّٰٓى ۙ 3	اَوْ	يَذَّكَّرُ	فَتَنْفَعَهُ	الذِّكْرٰى ؕ 4	اَمَّا	مَنِ
शायद कि वो	वो पाक हो जाता	या	वो नसीहत पकड़ता	तो फ़ायदा देती उसे	नसीहत	रहा	वो जो

اسْتَغْنٰى ۙ 5	فَاَنْتَ	لَهٗ	تَصَدّٰى ؕ 6	وَمَا	عَلَيْكَ	اَلَّا	يَزَّكّٰى ؕ 7
बेपरवाई करता है	तो आप	उसके लिए	आप तवज्जह करते हैं	हालाँकि नहीं	आप पर (ज़िम्मेदारी)	कि नहीं	वो पाक होता

وَاَمَّا	مَنْ	جَآءَكَ	يَسْعٰى ۙ 8	وَهُوَ	يَخْشٰى ۙ 9	فَاَنْتَ	عَنْهُ
और रहा	वो जो	आया है आपके पास	कोशिश करता हुआ	और वो	वो डरता है	तो आप	उस से

تَلَهّٰى ج 10	كَلَّآ	اِنَّهَا	تَذْكِرَةٌ ج 11	فَمَنْ	شَآءَ	ذَكَرَهٗ 12
आप बेरुख़ी बरत्ते हैं	हरगिज़ नहीं	बेशक वो	एक नसीहत है	तो जो कोई	चाहे	नसीहत हासिल करे उससे

وقف لازم

فِيْ صُحُفٍ	مُّكَرَّمَةٍ ۙ 13	مَّرْفُوْعَةٍ	مُّطَهَّرَةٍ ۙ 14	بِاَيْدِيْ	سَفَرَةٍ ۙ 15
सहीफ़ों में है	इज़्ज़त दिए गए	बुलंद मर्तबा	निहायत पाकीज़ा	हाथों में है	लिखने वालों के

كِرَامٍ	بَرَرَةٍ ؕ 16	قُتِلَ	الْاِنْسَانُ	مَآ اَكْفَرَهٗ ؕ 17	مِنْ اَيِّ شَيْءٍ	خَلَقَهٗ ؕ 18
मोअज़्ज़िज़	नेकोकार	मारा जाए	इंसान	किस क़द्र नाशुक्रा है वो	किस चीज़ से	उसने पैदा किया उसे

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ	خَلَقَهٗ	فَقَدَّرَهٗ ۙ 19	ثُمَّ	السَّبِيْلَ	يَسَّرَهٗ ۙ 20
एक नुत्फ़े से	उसने पैदा किया उसे	फिर उसने तक़दीर मुक़र्रर की उसकी	फिर	रास्ता	उसने आसान किया उसका

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ثُمَّ	اَمَاتَهٗ	فَاَقْبَرَهٗ ﴿21﴾ لا	ثُمَّ	اِذَا	شَآءَ	اَنْشَرَهٗ ﴿22﴾ ط	كَلَّا	لَمَّا
फिर	उसने मौत दी उसे	फिर उसने क़ब्र दी उसे	फिर	जब	वो चाहेगा	वो उठा खड़ा करेगा उसे	हरगिज़ नहीं	अभी तक नहीं

يَقْضِ	مَآ	اَمَرَهٗ ﴿23﴾ ط	فَلْيَنْظُرِ	الْاِنْسَانُ	اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿24﴾ لا	اَنَّا
उसने पूरा किया	जो	उसने हुक्म दिया था उसे	पस चाहिए कि देखे	इंसान	तरफ़ अपने खाने के	बेशक हम

صَبَبْنَا	الْمَآءَ	صَبًّا ﴿25﴾ لا	ثُمَّ	شَقَقْنَا	الْاَرْضَ	شَقًّا ﴿26﴾ لا	فَاَنْۢبَتْنَا
उंडेला हमने	पानी	ख़ूब उंडेलना	फिर	फाड़ी हमने	ज़मीन	ख़ूब फाड़ना	फिर उगाया हमने

فِيْهَا	حَبًّا ﴿27﴾ لا	وَّعِنَبًا	وَّقَضْبًا ﴿28﴾ لا	وَّزَيْتُوْنًا	وَّنَخْلًا ﴿29﴾ لا	وَّحَدَآئِقَ
उसमें	ग़ल्ला	और अंगूर	और तरकारी	और ज़ैतून	और खजूर	और बाग़ात

غُلْبًا ﴿30﴾ لا	وَّفَاكِهَةً	وَّاَبًّا ﴿31﴾ لا	مَّتَاعًا	لَّكُمْ	وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿32﴾ ط
घने	और फल	और चारा	फ़ायदे की चीज़ें हैं	तुम्हारे लिए	और तुम्हारे मवेशियों के लिए

فَاِذَا	جَآءَتِ	الصَّآخَّةُ ﴿33﴾ ز	يَوْمَ	يَفِرُّ	الْمَرْءُ	مِنْ اَخِيْهِ ﴿34﴾ لا
तो जब	आ जाएगी	कान बहरा कर देने वाली सख़्त आवाज़	उस दिन	भागेगा	इंसान	अपने भाई से

وَاُمِّهٖ	وَاَبِيْهِ ﴿35﴾ لا	وَصَاحِبَتِهٖ	وَبَنِيْهِ ﴿36﴾ ط	لِكُلِّ	امْرِئٍ	مِّنْهُمْ
और अपनी मां से	और अपने बाप से	और अपनी बीवी से	और अपने बेटों से	वास्ते हर	शख़्स के	उनमें से

يَوْمَئِذٍ	شَاْنٌ	يُّغْنِيْهِ ﴿37﴾ ط	وُجُوْهٌ	يَّوْمَئِذٍ	مُّسْفِرَةٌ ﴿38﴾ لا
उस दिन	ऐसी हालत होगी	जो बेपरवा कर देगी उसे	कुछ चेहरे	उस दिन	रौशन होंगे

ضَاحِكَةٌ	مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿39﴾ ج	وَوُجُوْهٌ	يَّوْمَئِذٍ	عَلَيْهَا	غَبَرَةٌ ﴿40﴾ لا
हंसते होंगे	ख़ुशख़बरी पाने वाले होंगे	और कुछ चेहरे	उस दिन	उन पर	ग़ुबार होगा

تَرْهَقُهَا	قَتَرَةٌ ﴿41﴾ ط	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْكَفَرَةُ	الْفَجَرَةُ ﴿42﴾ ع
छा रही होगी उन पर	स्याही	यही लोग हैं	वो	जो काफ़िर हैं	फ़ाजिर हैं

ع 1 42 5

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَاتُهَا: 29 | 81 سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ 7 | رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا	الشَّمْسُ	كُوِّرَتْ (1) ۖ	وَإِذَا	النُّجُوْمُ	انْكَدَرَتْ (2) ۖ	وَإِذَا
जब	सूरज	लपेट दिया जाएगा	और जब	सितारे	बेनूर हो जाएंगे	और जब

الْجِبَالُ	سُيِّرَتْ (3) ۖ	وَإِذَا	الْعِشَارُ	عُطِّلَتْ (4) ۖ	وَإِذَا	الْوُحُوْشُ
पहाड़	चला दिए जाएंगे	और जब	दस माह की हामिला ऊंटनियां	बेकार छोड़ दी जाएंगी	और जब	वहशी जानवर

حُشِرَتْ (5) ۖ	وَإِذَا	الْبِحَارُ	سُجِّرَتْ (6) ۖ	وَإِذَا	النُّفُوْسُ	زُوِّجَتْ (7) ۖ
इकट्ठे कर दिए जाएंगे	और जब	समुन्दर	भड़का दिए जाएंगे	और जब	जानें	जोड़ दी जाएंगी

وَإِذَا	الْمَوْءٗدَةُ	سُئِلَتْ (8) ۖ	بِأَيِّ	ذَنْۢبٍ	قُتِلَتْ (9) ۚ	وَإِذَا	الصُّحُفُ
और जब	ज़िन्दा गाढ़ी हुई लड़की	पूछी जाएगी	बवजह किस	गुनाह के	वो मारी गई	और जब	आमाल नामे

نُشِرَتْ (10) ۖ	وَإِذَا	السَّمَآءُ	كُشِطَتْ (11) ۖ	وَإِذَا	الْجَحِيْمُ	سُعِّرَتْ (12) ۖ
फैला दिए जाएंगे	और जब	आसमान	(उसकी) खाल उतार दी जाएगी	और जब	जहन्नम	भड़का दी जाएगी

وَإِذَا	الْجَنَّةُ	أُزْلِفَتْ (13) ۖ	عَلِمَتْ	نَفْسٌ	مَّآ	أَحْضَرَتْ (14) ۗ	فَلَآ
और जब	जन्नत	क़रीब ले आई जाएगी	जान लेगा	हर नफ़्स	जो	उसने हाज़िर किया	पस नहीं

أُقْسِمُ	بِالْخُنَّسِ (15) ۙ	الْجَوَارِ	الْكُنَّسِ (16) ۙ	وَالَّيْلِ	إِذَا
मैं क़सम खाता हूं	पीछे हटने वाले	चलने वाले	छुप जाने वाले (सितारों की)	और रात की	जब

عَسْعَسَ (17) ۙ	وَالصُّبْحِ	إِذَا	تَنَفَّسَ (18) ۙ	إِنَّهٗ	لَقَوْلُ	رَسُوْلٍ
वो रुख़्सत होती है	और सुबह की	जब	वो सांस लेती है	बेशक वो (क़ुरआन)	यक़ीनन क़ौल है	एक पैयामबर

كَرِيْمٍ (19) ۙ	ذِيْ قُوَّةٍ	عِنْدَ	ذِي الْعَرْشِ	مَكِيْنٍ (20) ۙ	مُّطَاعٍ	ثَمَّ
मोअज़्ज़िज़ का	जो क़ुव्वत वाला है	नज़दीक	अर्श वाले के	बुलंद मर्तबा है	इताअत किया जाता है	वहां

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالْاُفُقِ	رَاٰهُ	وَلَقَدْ	بِمَجْنُوْنٍ ۚ (22)	صَاحِبُكُمْ	وَمَا	اَمِيْنٍ ؕ (21)
आसमान के किनारे पर	उसने देखा उसे	और अलबत्ता तहक़ीक़	कोई मजनून	साथी तुम्हारा	और नहीं	अमानतदार है

بِقَوْلِ	هُوَ	وَمَا	بِضَنِيْنٍ ۚ (24)	عَلَى الْغَيْبِ	هُوَ	وَمَا	الْمُبِيْنِ ۚ (23)
क़ौल	वो	और नहीं है	हरगिज़ बख़ील	ग़ैब पर	वो	और नहीं	खुले

ذِكْرٌ	اِلَّا	هُوَ	اِنْ	تَذْهَبُوْنَ ؕ (26)	فَاَيْنَ	رَّجِيْمٍ ۙ (25)	شَيْطٰنٍ
एक नसीहत	मगर	वो	नहीं है	तुम जा रहे हो	फिर किधर	मरदूद का	शैतान

وَمَا	يَّسْتَقِيْمَ ؕ (28)	اَنْ	مِنْكُمْ	شَآءَ	لِمَنْ	لِّلْعٰلَمِيْنَ ۙ (27)
और नहीं	वो सीधा चले	ये कि	तुम में से	चाहे	उसके लिए जो	तमाम जहान वालों के लिए

ع 1 29 6

الْعٰلَمِيْنَ ع (29)	رَبُّ	اللّٰهُ	يَّشَآءَ	اَنْ	اِلَّآ	تَشَآءُوْنَ
तमाम जहानों का	जो रब है	अल्लाह	चाहे	ये कि	मगर	तुम चाहते

رُكُوْعُهَا: 1 — 82 سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ 82 — اٰيَاتُهَا: 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الْبِحَارُ	وَاِذَا	انْتَثَرَتْ ۙ (2)	الْكَوَاكِبُ	وَاِذَا	انْفَطَرَتْ ۙ (1)	السَّمَآءُ	اِذَا
समुन्दर	और जब	बिखर जाएंगे	सितारे	और जब	फट जाएगा	आसमान	जब

مَّا	نَفْسٌ	عَلِمَتْ	بُعْثِرَتْ ۙ (4)	الْقُبُوْرُ	وَاِذَا	فُجِّرَتْ ۙ (3)
जो	हर नफ़्स	जान लेगा	खोल दी जाएंगी	क़ब्रें	और जब	फाड़ दिए जाएंगे

بِرَبِّكَ	غَرَّكَ	مَا	الْاِنْسَانُ	يٰۤاَيُّهَا	وَاَخَّرَتْ ؕ (5)	قَدَّمَتْ
तेरे रब के बारे में	धोखे में डाला तुझे	किस चीज़ ने	इंसान	ऐ	और उसने पीछे छोड़ा	उसने आगे भेजा

فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ	فَعَدَلَكَ ۙ (7)	فَسَوّٰىكَ	خَلَقَكَ	الَّذِيْ	الْكَرِيْمِ ۙ (6)
जिस सूरत में	फिर उसने बराबर किया तुझे	फिर उसने दुरुस्त किया तुझे	पैदा किया तुझे	वो जिसने	जो बहुत इज़्ज़त वाला है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاِنَّ	بِالدِّيْنِ ⑨ لا	تُكَذِّبُوْنَ	بَلْ	كَلَّا	رَكَّبَكَ ⑧ ط	شَآءَ	مَّا
और बेशक	बदले (के दिन) को	तुम झुठलाते हो	बल्कि	हरगिज़ नहीं	उसने जोड़ दिया तुझे	उसने चाहा	जो

مَا	يَعْلَمُوْنَ	كَاتِبِيْنَ ⑪ لا	كِرَامًا	لَحٰفِظِيْنَ ⑩ لا	عَلَيْكُمْ
जो कुछ	वो जानते हैं	लिखने वाले हैं	जो मोअज़्ज़िज़	यक़ीनन निगरान हैं	तुम पर

الْفُجَّارَ	وَاِنَّ	لَفِيْ نَعِيْمٍ ⑬ ج	الْاَبْرَارَ	اِنَّ	تَفْعَلُوْنَ ⑫
बदकार लोग	और बेशक	यक़ीनन नेअमतों में होंगे	नेक लोग	बेशक	तुम करते हो

هُمْ	وَمَا	الدِّيْنِ ⑮	يَوْمَ	يَّصْلَوْنَهَا	لَفِيْ جَحِيْمٍ ⑭ صلے
वो	और नहीं	बदले के	दिन	वो जलेंगे उसमें	यक़ीनन जहन्नम में होंगे

ثُمَّ	الدِّيْنِ ⑰ لا	يَوْمُ	مَا	اَدْرٰىكَ	وَمَآ	بِغَآئِبِيْنَ ⑯ ط	عَنْهَا
फिर	बदले का	दिन	क्या है	बताए आपको	और क्या चीज़	कभी ग़ायब होने वाले	उससे

نَفْسٌ	لَا تَمْلِكُ	يَوْمَ	الدِّيْنِ ⑱ ط	يَوْمُ	مَا	اَدْرٰىكَ	مَآ
कोई नफ़्स	ना मालिक होगा	जिस दिन	बदले का	दिन	क्या है	बताए आपको	क्या चीज़

لِلّٰهِ ⑲ ع	يَوْمَئِذٍ	وَالْاَمْرُ	شَيْـًٔا ط	لِّنَفْسٍ
अल्लाह ही का होगा	उस दिन	और हुक्म	कुछ भी	किसी नफ़्स के लिए

ع 1 19 7

رُكُوْعُهَا: 1 — 86 سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ 83 — اٰيَاتُهَا: 36

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَلَى النَّاسِ	اكْتَالُوْا	اِذَا	الَّذِيْنَ	لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ① لا	وَيْلٌ
लोगों से	वो नाप कर लेते हैं	जब	वो लोग	नाप तोल में कमी करने वालों के लिए	हलाकत है

يُخْسِرُوْنَ ③ ط	وَّزَنُوْهُمْ	اَوْ	كَالُوْهُمْ	وَاِذَا	يَسْتَوْفُوْنَ ② صلے
वो कम देते हैं	वो तोल कर देते हैं उन्हें	या	वो नाप कर देते हैं उन्हें	और जब	वो पूरा-पूरा लेते हैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَلَا	يَظُنُّ	أُولَٰٓئِكَ	أَنَّهُم	مَّبۡعُوثُونَ (4)	لِيَوۡمٍ عَظِيمٍ (5)	يَوۡمَ
क्या नहीं	यक़ीन रखते	ये लोग	बेशक वो	उठाए जाने वाले हैं	एक बड़े दिन के लिए	जिस दिन

يَقُومُ	ٱلنَّاسُ	لِرَبِّ	ٱلۡعَٰلَمِينَ (6)	كَلَّآ	إِنَّ	كِتَٰبَ
खड़े होंगे	लोग	रब के लिए	तमाम जहानों के	हरगिज़ नहीं	बेशक	किताब (नामा-ए-आमाल)

ٱلۡفُجَّارِ	لَفِي سِجِّينٍ (7)	وَمَآ	أَدۡرَىٰكَ	مَا	سِجِّينٌ (8)	كِتَٰبٌ
बदकारों की	यक़ीनन सिज्जीन में है	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	सिज्जीन	एक किताब है

مَّرۡقُومٌ (9)	وَيۡلٌ	يَوۡمَئِذٍ	لِّلۡمُكَذِّبِينَ (10)	ٱلَّذِينَ	يُكَذِّبُونَ
लिखी हुई	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	वो जो	झुठलाते हैं

بِيَوۡمِ ٱلدِّينِ (11)	وَمَا	يُكَذِّبُ	بِهِۦٓ	إِلَّا	كُلُّ	مُعۡتَدٍ
बदले के दिन को	और नहीं	झुठलाता	उसे	मगर	हर	हद से बढ़ने वाला

أَثِيمٍ (12)	إِذَا	تُتۡلَىٰ	عَلَيۡهِ	ءَايَٰتُنَا	قَالَ	أَسَٰطِيرُ	ٱلۡأَوَّلِينَ (13)
सख़्त गुनाहगार	जब	पढ़ी जाती हैं	उस पर	आयात हमारी	वो कहता है	कहानियाँ हैं	पहलों की

كَلَّا	بَلۡۜ سكتة	رَانَ	عَلَىٰ قُلُوبِهِم	مَّا	كَانُواْ	يَكۡسِبُونَ (14)
हरगिज़ नहीं	बल्कि	ज़ंग चढ़ गया है	उनके दिलों पर	उसका जो	थे वो	वो कमाई करते

كَلَّآ	إِنَّهُمۡ	عَن رَّبِّهِمۡ	يَوۡمَئِذٖ	لَّمَحۡجُوبُونَ (15)	ثُمَّ	إِنَّهُمۡ
हरगिज़ नहीं	बेशक वो	अपने रब से	उस दिन	अलबत्ता हिजाब में रखे जाने वाले हैं	फिर	बेशक वो

لَصَالُواْ	ٱلۡجَحِيمِ (16)	ثُمَّ	يُقَالُ	هَٰذَا	ٱلَّذِي	كُنتُم	بِهِۦ
अलबत्ता झोंके जाने वाले हैं	जहन्नम में	फिर	कहा जाएगा	ये है	वो चीज़	थे तुम	जिसे

تُكَذِّبُونَ (17)	كَلَّآ	إِنَّ	كِتَٰبَ	ٱلۡأَبۡرَارِ	لَفِي عِلِّيِّينَ (18)	وَمَآ
तुम झुठलाया करते	हरगिज़ नहीं	बेशक	किताब	नेक लोगों की	यक़ीनन इल्लीयीन में है	और क्या चीज़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَدْرٰىكَ	مَا	عِلِّيُّوْنَ (19)	كِتٰبٌ	مَّرْقُوْمٌ (20)	يَّشْهَدُهُ	الْمُقَرَّبُوْنَ (21)
बताए आपको	क्या है	इल्लीयीन	एक किताब है	लिखी हुई	हाज़िर रहते हैं उस पर	मुक़र्रब (फ़रिश्ते)

اِنَّ	الْاَبْرَارَ	لَفِيْ نَعِيْمٍ (22)	عَلَى الْاَرَآئِكِ	يَنْظُرُوْنَ (23)	تَعْرِفُ
बेशक	नेक लोग	यक़ीनन नेअमतों में होंगे	मसनदों पर	वो देख रहे होंगे	आप पहचान लेंगे

فِيْ وُجُوْهِهِمْ	نَضْرَةَ	النَّعِيْمِ (24)	يُسْقَوْنَ	مِنْ رَّحِيْقٍ	مَّخْتُوْمٍ (25)
उनके चेहरों में	रौनक़	नेअमत की	वो पिलाए जाऐंगे	ख़ालिस शराब	मोहर बंद

خِتٰمُهٗ	مِسْكٌ	وَفِيْ ذٰلِكَ	فَلْيَتَنَافَسِ	الْمُتَنَافِسُوْنَ (26)
उसकी मोहर	मुश्क होगी	और उसमें	पस चाहिए कि एक दूसरे पर बाज़ी ले जाऐं	बाज़ी ले जाने वाले

وَمِزَاجُهٗ	مِنْ تَسْنِيْمٍ (27)	عَيْنًا	يَّشْرَبُ	بِهَا	الْمُقَرَّبُوْنَ (28)
और आमेज़िश उसकी	तसनीम से होगी	जो एक चश्मा है	पिऐंगे	उससे	मुक़र्रब लोग

اِنَّ	الَّذِيْنَ	اَجْرَمُوْا	كَانُوْا	مِنَ الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	يَضْحَكُوْنَ (29)
बेशक	वो जिन्होंने	जुर्म किए	थे वो	उन लोगों पर जो	ईमान लाए	वो हंसा करते

وَاِذَا	مَرُّوْا	بِهِمْ	يَتَغَامَزُوْنَ (30)	وَاِذَا	انْقَلَبُوْٓا	اِلٰٓى
और जब	वो गुज़रते	उनके पास से	वो एक दूसरे को आंख से इशारे करते	और जब	वो पलट कर जाते	तरफ़

اَهْلِهِمُ	انْقَلَبُوْا	فَكِهِيْنَ (31)	وَاِذَا	رَاَوْهُمْ	قَالُوْٓا	اِنَّ
अपने घर वालों के	वो पलटते	दिल्लगी करते हुए	और जब	वो देखते उन्हें	वो कहते	बेशक

هٰٓؤُلَآءِ	لَضَآلُّوْنَ (32)	وَمَآ	اُرْسِلُوْا	عَلَيْهِمْ	حٰفِظِيْنَ (33)
ये लोग	यक़ीनन गुमराह हैं	हालांकि नहीं	वो भेजे गए थे	उन पर	निगहबान बना कर

فَالْيَوْمَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنَ الْكُفَّارِ	يَضْحَكُوْنَ (34)	عَلَى الْاَرَآئِكِ
पस आज के दिन	वो लोग जो	ईमान लाए	काफ़िरों पर	वो हंस रहे होंगे	मसनदों पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 1 36 8

يَنْظُرُوْنَ ﴿35﴾ ط	هَلْ	ثُوِّبَ	الْكُفَّارُ	مَا	كَانُوْا	يَفْعَلُوْنَ ﴿36﴾ ع
वो देख रहे होंगे	क्या	बदला दिए गए	काफ़िर	जो	थे वो	वो किया करते

اٰيَاتُهَا: 25 — 84 سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ 83 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا	السَّمَآءُ	انْشَقَّتْ ﴿1﴾ لا	وَ اَذِنَتْ	لِرَبِّهَا	وَ حُقَّتْ ﴿2﴾ لا	وَ اِذَا
जब	आसमान	फट जाएगा	और वो कान लगाए हुए है	अपने रब के लिए	और वो हक़ दिया गया है	और जब

الْاَرْضُ	مُدَّتْ ﴿3﴾ لا	وَ اَلْقَتْ	مَا	فِيْهَا	وَ تَخَلَّتْ ﴿4﴾ لا	وَ اَذِنَتْ
ज़मीन	फैला दी जाएगी	और वो डाल देगी	जो कुछ	उसमें है	और वो ख़ाली हो जाएगी	और वो कान लगाए हुए है

لِرَبِّهَا	وَ حُقَّتْ ﴿5﴾ ط	يٰاَيُّهَا	الْاِنْسَانُ	اِنَّكَ	كَادِحٌ	اِلٰى رَبِّكَ
अपने रब के लिए	और वो हक़ दी गई है	ऐ	इंसान	बेशक तू	मेहनत करने वाला है	तरफ़ अपने रब के

كَدْحًا	فَمُلٰقِيْهِ ﴿6﴾ ج	فَاَمَّا	مَنْ	اُوْتِيَ	كِتٰبَهٗ	بِيَمِيْنِهٖ ﴿7﴾ لا	فَسَوْفَ
सख़्त मेहनत	फिर मिलने वाला है उससे	तो रहा	वो जो	दिया गया	किताब अपनी	अपने दाऐं हाथ में	तो अनक़रीब

يُحَاسَبُ	حِسَابًا	يَّسِيْرًا ﴿8﴾ لا	وَّ يَنْقَلِبُ	اِلٰٓى اَهْلِهٖ	مَسْرُوْرًا ﴿9﴾ ط	وَ اَمَّا
वो हिसाब लिया जाएगा	हिसाब	निहायत आसान	और वो लौटेगा	तरफ़ अपने घर वालों के	मसरूर/ख़ुश	और रहा

مَنْ	اُوْتِيَ	كِتٰبَهٗ	وَرَآءَ	ظَهْرِهٖ ﴿10﴾ لا	فَسَوْفَ	يَدْعُوْا	ثُبُوْرًا ﴿11﴾ لا
वो जो	दिया गया	किताब अपनी	पीछे	अपनी पुश्त के	तो अनक़रीब	वो पुकारेगा	हलाकत को

وَّ يَصْلٰى	سَعِيْرًا ﴿12﴾ ط	اِنَّهٗ	كَانَ	فِيْٓ اَهْلِهٖ	مَسْرُوْرًا ﴿13﴾ ط	اِنَّهٗ	ظَنَّ
और वो जलेगा	भड़कती आग में	बेशक वो	था वो	अपने घर वालों में	मसरूर/ख़ुश	बेशक वो	वो समझता था

اَنْ	لَّنْ	يَّحُوْرَ ﴿14﴾ ج	بَلٰٓى ج	اِنَّ	رَبَّهٗ	كَانَ	بِهٖ	بَصِيْرًا ﴿15﴾ ط
कि	हरगिज़ नहीं	वो लौटेगा	क्यों नहीं	बेशक	रब उसका	था	उसे	ख़ूब देखने वाला

معانقة 17

AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

وَالْقَمَرِ	وَسَقَ (17) لا	وَمَا	وَالَّيْلِ	بِالشَّفَقِ (16) لا	اُقْسِمُ	فَلَآ
और चांद की	वो समेट ले	और उसकी जिसे	और रात की	शफ़क़ की	मैं क़सम खाता हूं	पस नहीं

لَهُمْ	فَمَا	عَنْ طَبَقٍ (19) ط	طَبَقًا	لَتَرْكَبُنَّ	اتَّسَقَ (18) لا	اِذَا
उन्हें	पस क्या है	दूसरे दर्जे से	एक दर्जे को	अलबत्ता तुम ज़रूर चढ़ते जाओगे	वो पूरा हो जाए	जब

بَلِ	لَا يَسْجُدُوْنَ (21) السجدة	الْقُرْاٰنُ	عَلَيْهِمُ	قُرِئَ	وَاِذَا	لَا يُؤْمِنُوْنَ (20) لا
बल्कि	नहीं वो सज्दा करते	क़ुरआन	उन पर	पढ़ा जाता है	और जब	नहीं वो ईमान लाते

السجدة 13

يُوْعُوْنَ (23) صلے	بِمَا	اَعْلَمُ	وَاللّٰهُ	يُكَذِّبُوْنَ (22) صلے	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ
वो समेट रहे हैं	उसे जो	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	वो झुठलाते हैं	कुफ़्र किया	वो लोग जिन्होंने

اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِلَّا	اَلِيْمٍ (24) لا	بِعَذَابٍ	فَبَشِّرْهُمْ
ईमान लाए	उन लोगों के जो	सिवाए	दर्दनाक की	अज़ाब	पस खुशख़बरी दे दीजिए उन्हें

مَمْنُوْنٍ (25) ع	غَيْرُ	اَجْرٌ	لَهُمْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا
ख़त्म होने वाला	ना	अजर है	उनके लिए	नेक	और उन्होंने अमल किए

ع 1 25 9

رُكُوْعُهَا 1 — 27 سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ 85 — اٰيَاتُهَا 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَّمَشْهُوْدٍ (3) ط	وَشَاهِدٍ	الْمَوْعُوْدِ (2) لا	وَالْيَوْمِ	ذَاتِ الْبُرُوْجِ (1) لا	وَالسَّمَآءِ
और हाज़िर किए हुए की	और हाज़िर होने वाले	वादा किए गए की	और दिन	बुर्जों वाले की	क़सम है आसमान

عَلَيْهَا	هُمْ	اِذْ	ذَاتِ الْوَقُوْدِ (5) لا	النَّارِ	اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ (4) لا	قُتِلَ
उस पर	वो	जब	ईंधन वाली	जो आग थी	ख़ंदक़ों वाले	मारे गए

وَمَا	شُهُوْدٌ (7) ط	بِالْمُؤْمِنِيْنَ	يَفْعَلُوْنَ	مَا	عَلٰى	وَّهُمْ	قُعُوْدٌ (6) لا
और नहीं	गवाह थे	साथ मोमिनों के	वो कर रहे थे	उसके जो	ऊपर	और वो	बैठे हुए थे

نَقَمُوْا	مِنْهُمْ	اِلَّآ	اَنْ	يُّؤْمِنُوْا	بِاللّٰهِ	الْعَزِيْزِ	الْحَمِيْدِ ۙ﴿8﴾
उन्होंने इंतिक़ाम लिया	उनसे	मगर	ये कि	वो ईमान लाए	अल्लाह पर	जो बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब तारीफ़ वाला है

الَّذِيْ	لَهٗ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ
वो जो	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के

شَهِيْدٌ ﴿9﴾ؕ	اِنَّ	الَّذِيْنَ	فَتَنُوا	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتِ	ثُمَّ
गवाह है	बेशक	वो लोग जिन्होंने	आज़माइश में डाला	मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों को	फिर

لَمْ	يَتُوْبُوْا	فَلَهُمْ	عَذَابُ	جَهَنَّمَ	وَلَهُمْ	عَذَابُ	الْحَرِيْقِ ﴿10﴾ؕ
ना	उन्होंने तौबा की	तो उनके लिए	अज़ाब है	जहन्नम का	और उनके लिए	अज़ाब है	जलने का

اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَهُمْ	جَنّٰتٌ	تَجْرِيْ
बेशक	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं

أية حصية12

مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ۬ؕ	ذٰلِكَ	الْفَوْزُ	الْكَبِيْرُ ﴿11﴾ؕ	اِنَّ	بَطْشَ
उनके नीचे से	नहरें	ये	कामयाबी है	बहुत बड़ी	बेशक	पकड़

رَبِّكَ	لَشَدِيْدٌ ﴿12﴾ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	يُبْدِئُ	وَيُعِيْدُ ﴿13﴾ۚ	وَهُوَ	الْغَفُوْرُ
आपके रब की	अलबत्ता बहुत शदीद है	बेशक वो	वो ही	पहली बार पैदा करता है	और वो ही लौटाएगा	और वो ही है	बहुत बख़्शने वाला

الْوَدُوْدُ ﴿14﴾ۙ	ذُو الْعَرْشِ	الْمَجِيْدُ ﴿15﴾ۙ	فَعَّالٌ	لِّمَا	يُرِيْدُ ﴿16﴾ؕ	هَلْ
बहुत मोहब्बत करने वाला	अर्श वाला	बड़ी शान वाला	कर गुज़रने वाला	उसे जो	वो चाहता है	क्या

اَتٰىكَ	حَدِيْثُ	الْجُنُوْدِ ﴿17﴾ۙ	فِرْعَوْنَ	وَثَمُوْدَ ﴿18﴾ؕ	بَلِ	الَّذِيْنَ
आई आपके पास	ख़बर	लश्करों की	फ़िरऔन	और समूद के	बल्कि	वो जिन्होंने

كَفَرُوْا	فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿19﴾ۙ	وَّاللّٰهُ	مِنْ وَّرَآئِهِمْ	مُّحِيْطٌ ﴿20﴾ۚ
कुफ़्र किया	झुठलाने में लगे हुए हैं	और अल्लाह	उनके पीछे से (उन्हें)	घेरने वाला है

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 1 22 10

بَلْ	هُوَ	قُرْاٰنٌ	مَّجِيْدٌ ۙ (21)	فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ (22) ع
बल्कि	वो	क़ुरआन है	बड़ी शान वाला	लौहे महफ़ूज़ में

آيَاتُهَا: 17 — 86 سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ 36 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَآءِ	وَالطَّارِقِ ۙ (1)	وَمَآ	اَدْرٰىكَ	مَا	الطَّارِقُ ۙ (2)	النَّجْمُ
क़सम है आसमान की	और रात को आने वाले की	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	रात को आने वाला	सितारा है
الثَّاقِبُ ۙ (3)	اِنْ	كُلُّ نَفْسٍ	لَّمَّا	عَلَيْهَا	حَافِظٌ ؕ (4)	فَلْيَنْظُرِ
चमकता हुआ	नहीं	कोई नफ़्स	मगर	है उस पर	एक हिफ़ाज़त करने वाला	पस चाहिए कि देखे
الْاِنْسَانُ	مِمَّ	خُلِقَ ؕ (5)	خُلِقَ	مِنْ مَّآءٍ	دَافِقٍ ۙ (6)	يَّخْرُجُ
इन्सान	किस चीज़ से	वो पैदा किया गया	वो पैदा किया गया	पानी से	उछलने वाले	जो निकलता है
مِنْۢ بَيْنِ	الصُّلْبِ	وَالتَّرَآئِبِ ؕ (7)	اِنَّهٗ	عَلٰى رَجْعِهٖ	لَقَادِرٌ ؕ (8)	يَوْمَ
दर्मियान से	पीठ	और सीने की हड्डियों के	बेशक वो	उसके लौटाने पर	यक़ीनन क़ादिर है	जिस दिन
تُبْلَى	السَّرَآئِرُ ۙ (9)	فَمَا	لَهٗ	مِنْ قُوَّةٍ	وَّلَا	نَاصِرٍ ؕ (10)
जाँच पड़ताल की जाएगी	तमाम राज़ों की	तो नहीं होगी	उसके लिए	कोई क़ुव्वत	और ना	कोई मददगार

وَالسَّمَآءِ	ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ (11)	وَالْاَرْضِ	ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ (12)	اِنَّهٗ	لَقَوْلٌ
क़सम है आसमान की	जो पलटने वाला है	और ज़मीन की	जो फटने वाली है	बेशक वो	यक़ीनन एक बात है

فَصْلٌ ۙ (13)	وَّمَا	هُوَ	بِالْهَزْلِ ؕ (14)	اِنَّهُمْ	يَكِيْدُوْنَ	كَيْدًا ۙ (15)
फ़ैसला कुन	और नहीं है	वो	कोई हंसी मज़ाक़	बेशक वो	वो चाल चल रहे हैं	एक चाल

ع 1 17 11

وَّاَكِيْدُ	كَيْدًا ۚ (16)	فَمَهِّلِ	الْكٰفِرِيْنَ	اَمْهِلْهُمْ	رُوَيْدًا (17) ع
और मैं तदबीर कर रहा हूँ	एक तदबीर	पस मोहलत दे दीजिए	काफ़िरों को	मोहलत देना उन्हें	(मोहलत) थोड़ी सी

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَاتُهَا : 19 | 87 سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ 8 | رُكُوْعُهَا : 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّذِىْ	فَسَوّٰى (2)	خَلَقَ	الَّذِىْ	الْاَعْلَى (1)	رَبِّكَ	اسْمَ	سَبِّحِ
और वो जिसने	फिर उसने दुरुस्त किया	पैदा किया	वो जिसने	जो बहुत बुलंद है	अपने रब के	नाम की	तस्बीह कीजिए

غُثَآءً	فَجَعَلَهٗ	الْمَرْعٰى (4)	اَخْرَجَ	وَالَّذِىْٓ	فَهَدٰى (3)	قَدَّرَ
कूड़ा	फिर उसने बना दिया उसे	चारा	निकाला	और वो जिसने	फिर उसने हिदायत बख़्शी	अंदाज़ा किया

اللّٰهُ	شَآءَ	مَا	اِلَّا	تَنْسٰٓى (6)	فَلَا	سَنُقْرِئُكَ	اَحْوٰى (5)
अल्लाह	चाहे	जो	मगर	आप भूलेंगे	फिर नहीं	अनक़रीब हम पढ़ा देंगे आपको	स्याह

لِلْيُسْرٰى (8)	وَنُيَسِّرُكَ	يَخْفٰى (7)	وَمَا	الْجَهْرَ	يَعْلَمُ	اِنَّهٗ
आसान (रास्ते) की	और हम आसानी कर देंगे आपके लिए	पोशीदा है	और उसको जो	ज़ाहिर को	वो जानता है	बेशक वो

يَّخْشٰى (10)	مَنْ	سَيَذَّكَّرُ	الذِّكْرٰى (9)	نَّفَعَتِ	اِنْ	فَذَكِّرْ
डरता होगा	वो जो	अनक़रीब नसीहत पकड़ेगा	नसीहत करना	फ़ायदा दे	अगर	पस नसीहत कीजिए

ثُمَّ	الْكُبْرٰى (12)	النَّارَ	يَصْلَى	الَّذِىْ	الْاَشْقَى (11)	وَيَتَجَنَّبُهَا
फिर	बहुत बड़ी	आग में	जलेगा	वो जो	सब से ज़्यादा बदबख़्त	और इज्तिनाब करेगा उस से

تَزَكّٰى (14)	مَنْ	اَفْلَحَ	قَدْ	يَحْيٰى (13)	وَلَا	فِيْهَا	لَا يَمُوْتُ
पाक हुआ	वो जो	फ़लाह पा गया	यक़ीनन	वो जिएगा	और ना	उसमें	ना वो मरेगा

تُؤْثِرُوْنَ	بَلْ	فَصَلّٰى (15)	رَبِّهٖ	اسْمَ	وَذَكَرَ
तुम तरजीह देते हो	बल्कि	फिर उसने नमाज़ पढ़ी	अपने रब का	नाम	और उसने ज़िक्र किया

هٰذَا	اِنَّ	وَّاَبْقٰى (17)	خَيْرٌ	وَالْاٰخِرَةُ	الدُّنْيَا (16)	الْحَيٰوةَ
ये	यक़ीनन	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली है	बेहतर है	और आख़िरत	दुनिया की	ज़िंदगी को

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَفِي الصُّحُفِ	الْاُوْلٰى ۙ﴿18﴾	صُحُفِ	اِبْرٰهِيْمَ	وَ مُوْسٰى ﴿19﴾ ع
अलबत्ता सहीफ़ों में है	पहले	सहीफ़े	इब्राहीम	और मूसा के

ع 1 19 12

اٰيَاتُهَا: 26 — 88 سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ 68 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ	اَتٰىكَ	حَدِيْثُ	الْغَاشِيَةِ ؕ﴿1﴾	وُجُوْهٌ	يَّوْمَئِذٍ	خَاشِعَةٌ ۙ﴿2﴾
क्या	आई है आपके पास	ख़बर	ढांप लेने वाली की	कुछ चेहरे	उस दिन	ज़लील होंगे

عَامِلَةٌ	نَّاصِبَةٌ ۙ﴿3﴾	تَصْلٰى	نَارًا	حَامِيَةً ۙ﴿4﴾	تُسْقٰى	مِنْ عَيْنٍ
अमल करने वाले	थक जाने वाले	वो जलेंगे	आग में	भड़कती हुई	वो पिलाए जाऐंगे	एक चश्मे से

اٰنِيَةٍ ؕ﴿5﴾	لَيْسَ	لَهُمْ	طَعَامٌ	اِلَّا	مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ﴿6﴾	لَّا يُسْمِنُ
खौलते हुए पानी के	नहीं है	उनके लिए	कोई खाना	सिवाय	कांटों के	ना वो मोटा करेगा

وَلَا	يُغْنِيْ	مِنْ جُوْعٍ ؕ﴿7﴾	وُجُوْهٌ	يَّوْمَئِذٍ	نَّاعِمَةٌ ۙ﴿8﴾	لِّسَعْيِهَا
और ना	वो काम आएगा	भूख से	कुछ चेहरे	उस दिन	तरो-ताज़ा होंगे	अपनी कोशिशों पर

رَاضِيَةٌ ۙ﴿9﴾	فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ﴿10﴾	لَّا تَسْمَعُ	فِيْهَا	لَاغِيَةً ؕ﴿11﴾	فِيْهَا
राज़ी होंगे	बुलंद जन्नत में होंगे	नहीं वो सुनेंगे	उसमें	कोई लग़्व बात	उसमें

عَيْنٌ	جَارِيَةٌ ۘ﴿12﴾	فِيْهَا	سُرُرٌ	مَّرْفُوْعَةٌ ۙ﴿13﴾	وَّ اَكْوَابٌ
एक चश्मा होगा	जारी/रवां	उसमें	मसनदें होंगी	बुलंद	और प्याले

وقف لازم

مَّوْضُوْعَةٌ ۙ﴿14﴾	وَّ نَمَارِقُ	مَصْفُوْفَةٌ ۙ﴿15﴾	وَّ زَرَابِيُّ	مَبْثُوْثَةٌ ؕ﴿16﴾	اَفَلَا
रखे हुए	और तकिये	सफ़ दर सफ़	और नफ़ीस क़ालीन	फैलाए हुए	क्या फिर नहीं

يَنْظُرُوْنَ	اِلَى الْاِبِلِ	كَيْفَ	خُلِقَتْ وقفة ﴿17﴾	وَ اِلَى السَّمَآءِ	كَيْفَ
वो देखते	तरफ़ ऊंटों के	कैसे	वो पैदा किए गए	और तरफ़ आसमान के	कैसे

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُفِعَتْ (18)	وَ اِلَى الْجِبَالِ	كَيْفَ	نُصِبَتْ (19)	وَ اِلَى الْاَرْضِ	كَيْفَ
वो बुलंद किया गया	और तरफ़ पहाड़ों के	कैसे	वो नसब किए गए	और तरफ़ ज़मीन के	कैसे

سُطِحَتْ (20)	فَذَكِّرْ	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مُذَكِّرٌ (21)	لَسْتَ	عَلَيْهِمْ
वो बिछाई गई	पस नसीहत कीजिए	बेशक	आप तो	नसीहत करने वाले हैं	नहीं आप	उन पर

بِمُصَيْطِرٍ (22)	اِلَّا	مَنْ	تَوَلّٰى	وَ كَفَرَ (23)	فَيُعَذِّبُهُ	اللّٰهُ	الْعَذَابَ
दारोग़ा/ज़िम्मेदार	मगर	वो जिसने	मुंह मोड़ा	और उसने इंकार किया	तो अज़ाब देगा उसे	अल्लाह	अज़ाब

ع 1 26 13

الْاَكْبَرَ (24)	اِنَّ	اِلَيْنَآ	اِيَابَهُمْ (25)	ثُمَّ	اِنَّ	عَلَيْنَا	حِسَابَهُمْ (26)
सबसे बड़ा	बेशक	हमारी ही तरफ़	लौटना है उनका	फिर	बेशक	हमारे ही ज़िम्मे	हिसाब है उनका

اٰيَاتُهَا: 30 — 89 سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ 10 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْفَجْرِ (1)	وَ لَيَالٍ عَشْرٍ (2)	وَّالشَّفْعِ	وَالْوَتْرِ (3)	وَالَّيْلِ	اِذَا	يَسْرِ (4)
क़सम है फ़ज्र की	और दस रातों की	और जुफ़्त	और ताक़ की	और रात की	जब	वो चलती है

هَلْ	فِيْ ذٰلِكَ	قَسَمٌ	لِّذِيْ حِجْرٍ (5)	اَلَمْ	تَرَ	كَيْفَ	فَعَلَ
क्या है	उसमें	एक बड़ी क़सम	अक़्ल वालों के लिए	क्या नहीं	आपने देखा	कैसे	किया

رَبُّكَ	بِعَادٍ (6)	اِرَمَ	ذَاتِ الْعِمَادِ (7)	الَّتِيْ	لَمْ	يُخْلَقْ
आपके रब ने	साथ आद के	जो इरम (क़बीले) के थे	सुतूनों वाले	वो जो	नहीं	पैदा किया गया

مِثْلُهَا	فِي الْبِلَادِ (8)	وَ ثَمُوْدَ	الَّذِيْنَ	جَابُوا	الصَّخْرَ	بِالْوَادِ (9)
उन जैसा	शहरों में	और समूद के	वो जिन्होंने	तराशा	चट्टानों को	वादी में

وَ فِرْعَوْنَ	ذِي الْاَوْتَادِ (10)	الَّذِيْنَ	طَغَوْا	فِي الْبِلَادِ (11)	فَاَكْثَرُوْا
और फ़िरऔन	मेख़ों वाले के	वो जिन्होंने	सरकशी की	शहरों में	फिर उन्होंने कसरत से किया

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

إِنَّ	عَذَابٍ (13) ۚ	سَوْطَ	رَبُّكَ	عَلَيْهِمْ	فَصَبَّ	الْفَسَادَ (12) ۖ	فِيهَا
बेशक	अज़ाब का	कोड़ा	आपके रब ने	उन पर	तो बरसाया	फ़साद	उनमें

رَبُّهُ	ابْتَلَاهُ	إِذَا مَا	الْإِنْسَانُ	فَأَمَّا	لَبِالْمِرْصَادِ (14) ۗ	رَبَّكَ
रब उसका	आज़माता है उसे	जब	इंसान	तो रहा	अलबत्ता घात में है	रब आपका

إِذَا مَا	وَأَمَّا	أَكْرَمَنِ (15) ۗ	رَبِّي	فَيَقُولُ	وَنَعَّمَهُ ۙ	فَأَكْرَمَهُ
जब कभी	और लेकिन	इज़्ज़त दी मुझे	मेरे रब ने	तो वो कहता है	और वो नेअमत देता है उसे	फिर वो इज़्ज़त देता है उसे

أَهَانَنِ (16) ۚ	رَبِّي	فَيَقُولُ	رِزْقَهُ ۙ	عَلَيْهِ	فَقَدَرَ	ابْتَلَاهُ
ज़लील कर दिया मुझे	मेरे रब ने	तो वो कहता है	रिज़्क़ उसका	उस पर	फिर वो तंग कर देता है	वो आज़माता है उसे

عَلَىٰ طَعَامِ	تَحَاضُّونَ	وَلَا	الْيَتِيمَ (17) ۙ	تُكْرِمُونَ	لَا	بَلْ	كَلَّا
खाना खिलाने पर	तुम आपस में तरग़ीब देते	और नहीं	यतीम को	तुम इज़्ज़त देते	नहीं	बल्कि	हरगिज नहीं

الْمَالَ	وَتُحِبُّونَ	لَمًّا (19) ۙ	أَكْلًا	التُّرَاثَ	وَتَأْكُلُونَ	الْمِسْكِينِ (18) ۙ
माल से	और तुम मोहब्बत रखते हो	समेट कर	खा जाना	मीरास को	और तुम खा जाते हो	मिस्कीन के

وَجَاءَ	دَكًّا دَكًّا (21) ۙ	الْأَرْضُ	دُكَّتِ	إِذَا	كَلَّا	جَمًّا (20) ۗ	حُبًّا
और आएगा	ख़ूब रेज़ा-रेज़ा करना	ज़मीन	रेज़ा-रेज़ा कर दी जाएगी	जब	हरगिज़ नहीं	बहुत ज़्यादा	मोहब्बत

يَوْمَئِذٍ	بِجَهَنَّمَ ۙ	يَوْمَئِذٍ	وَجِيءَ	صَفًّا صَفًّا (22) ۚ	وَالْمَلَكُ	رَبُّكَ
उस दिन	जहन्नम	उस दिन	और लाई जाएगी	सफ़ दर सफ़	और फ़रिश्ते	रब अपका

يَا لَيْتَنِي	يَقُولُ	الذِّكْرَىٰ (23) ۗ	لَهُ	وَأَنَّىٰ	الْإِنْسَانُ	يَتَذَكَّرُ
ऐ काश कि मैं	वो कहेगा	नसीहत पकड़ना	उसके लिए	और क्यों कर होगा	इंसान	नसीहत पकड़ेगा

وَلَا يُوثِقُ	أَحَدٌ (25) ۙ	عَذَابَهُ	لَا يُعَذِّبُ	فَيَوْمَئِذٍ	لِحَيَاتِي (24) ۚ	قَدَّمْتُ
और ना बांधेगा	कोई एक	अज़ाब उस जैसा	ना अज़ाब देगा	तो उस दिन	अपनी ज़िंदगी के लिए	आगे भेजा होता मैंने

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَثَاقَهٗٓ	اَحَدٌ ﴿26﴾	يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ	الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿27﴾	ارْجِعِيْٓ	اِلٰى رَبِّكِ
बांधना उस जैसा	कोई एक	ऐ नफ़्स	जो मुत्मईन है	वापस चलो	तरफ़ अपने रब के

ع 1 30 14

رَاضِيَةً	مَّرْضِيَّةً ﴿28﴾	فَادْخُلِيْ	فِيْ عِبٰدِيْ ﴿29﴾	وَادْخُلِيْ	جَنَّتِيْ ﴿30﴾
राज़ी होकर	पसंदीदा बन कर	फिर दाख़िल हो जाओ	मेरे बंदों में	और दाख़िल हो जाओ	मेरी जन्नत में

اٰيَاتُهَا: 20 — 90 سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ 35 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ	بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿1﴾	وَاَنْتَ	حِلٌّۢ	بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿2﴾	وَوَالِدٍ
नहीं मैं क़सम खाता हूं	इस शहर की	और आप	मुक़ीम हैं	इस शहर में	क़सम है वालिद की

وَّمَا	وَلَدَ ﴿3﴾	لَقَدْ	خَلَقْنَا	الْاِنْسَانَ	فِيْ كَبَدٍ ﴿4﴾	اَيَحْسَبُ
और जिसे	उसने जन्म दिया	अलबत्ता तहक़ीक़	पैदा किया हमने	इंसान को	मशक़्क़त में	क्या वो समझता है

وقف لازم

اَنْ	لَّنْ	يَّقْدِرَ	عَلَيْهِ	اَحَدٌ ﴿5﴾	يَقُوْلُ	اَهْلَكْتُ	مَالًا	لُّبَدًا ﴿6﴾
कि	हरगिज़ नहीं	क़ादिर होगा	उस पर	कोई एक	वो कहता है	हलाक कर दिया मैंने	माल	ढेरों

اَيَحْسَبُ	اَنْ	لَّمْ	يَرَهٗٓ	اَحَدٌ ﴿7﴾	اَلَمْ	نَجْعَلْ	لَّهٗ	عَيْنَيْنِ ﴿8﴾
क्या वो समझता है	कि	नहीं	देखा उसे	किसी एक ने	क्या नहीं	हमने बनाई	उसके लिए	दो आंखें

وَلِسَانًا	وَّشَفَتَيْنِ ﴿9﴾	وَهَدَيْنٰهُ	النَّجْدَيْنِ ﴿10﴾	فَلَا	اقْتَحَمَ	الْعَقَبَةَ ﴿11﴾
और एक ज़बान	और दो होंठ	और दिखाए हमने उसे	दोनों रास्ते	पस ना	वो दाख़िल हुआ	घाटी में

وَمَآ	اَدْرٰىكَ	مَا	الْعَقَبَةُ ﴿12﴾	فَكُّ	رَقَبَةٍ ﴿13﴾	اَوْ	اِطْعٰمٌ	فِيْ يَوْمٍ
और क्या चीज़	बताए आपको	कि क्या है	वो घाटी	आज़ाद करना	एक गर्दन का	या	खाना खिलाना	एक दिन में

ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿14﴾	يَّتِيْمًا	ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿15﴾	اَوْ	مِسْكِيْنًا	ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿16﴾
भूख वाले	किसी यतीम	क़राबत वाले को	या	किसी मिस्कीन	ख़ाकनशीन को

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ثُمَّ	كَانَ	مِنَ الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ	وَتَوَاصَوْا
फिर	हो वो	उनमें से जो	ईमान लाए	और उन्होंने एक दूसरे को तलक़ीन की	सब्र करने की	और एक दूसरे को तलक़ीन की

بِالْمَرْحَمَةِ ﴿17﴾	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿18﴾	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
रहम करने की	यही लोग हैं	दाएें हाथ वाले	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

بِاٰيٰتِنَا	هُمْ	اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿19﴾	عَلَيْهِمْ	نَارٌ	مُّؤْصَدَةٌ ﴿20﴾ ع
हमारी आयात के साथ	वो हैं	बाऐं हाथ वाले	उन पर	आग होगी	बंद की हुई

1 ع 20 15

اٰيَاتُهَا: 15 — 91 سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ 26 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالشَّمْسِ	وَضُحٰىهَا ﴿1﴾	وَالْقَمَرِ	اِذَا	تَلٰىهَا ﴿2﴾	وَالنَّهَارِ	اِذَا
क़सम है सूरज की	और उसकी धूप की	और चांद की	जब	वो उसके पीछे आए	और दिन की	जब

جَلّٰىهَا ﴿3﴾	وَالَّيْلِ	اِذَا	يَغْشٰىهَا ﴿4﴾	وَالسَّمَآءِ	وَمَا	بَنٰىهَا ﴿5﴾
वो ज़ाहिर करे उसे	और रात की	जब	वो ढाँप ले उसे	और आसमान की	और उसकी	जिसने बनाया उसे

وَالْاَرْضِ	وَمَا	طَحٰىهَا ﴿6﴾	وَنَفْسٍ	وَّمَا	سَوّٰىهَا ﴿7﴾
और ज़मीन की	और उसकी	जिसने बिछाया उसे	और नफ़्स की	और उसकी	जिसने दुरुस्त किया उसे

فَاَلْهَمَهَا	فُجُوْرَهَا	وَتَقْوٰىهَا ﴿8﴾	قَدْ	اَفْلَحَ	مَنْ	زَكّٰىهَا ﴿9﴾
पस उसने इलहाम की उसे	बदी उसकी	और तक़वा उसका	यक़ीनन	वो फ़लाह पा गया	जिसने	पाक किया उसे

وَقَدْ	خَابَ	مَنْ	دَسّٰىهَا ﴿10﴾	كَذَّبَتْ	ثَمُوْدُ	بِطَغْوٰىهَآ ﴿11﴾	اِذِ
और यक़ीनन	वो नाकाम हुआ	जिसने	दबा दिया उसे	झुठलाया	समूद ने	बवजह अपनी सरकशी के	जब

انْۢبَعَثَ	اَشْقٰىهَا ﴿12﴾	فَقَالَ	لَهُمْ	رَسُوْلُ اللّٰهِ	نَاقَةَ	اللّٰهِ
उठा	सबसे बड़ा बदबख़्त उसका	तो कहा	उन्हें	अल्लाह के रसूल ने	ऊंटनी है	अल्लाह की

وَسُقْيٰهَا ⑬ ط	فَكَذَّبُوْهُ	فَعَقَرُوْهَا صلے	فَدَمْدَمَ	عَلَيْهِمْ	رَبُّهُمْ
और पानी पिलाना है उसे	तो उन्होंने झुठलाया उसे	फिर कूंचें काट दीं उसकी	तो हलाकत डाली	उन पर	उनके रब ने

ع 1 15 16

بِذَنْۢبِهِمْ	فَسَوّٰىهَا ⑭ صلے	وَلَا	يَخَافُ	عُقْبٰهَا ⑮ ع
बवजह उनके गुनाहों के	फिर उसने बराबर कर दिया उसे	और नहीं	वो डरता	उसके अंजाम से

اٰیَاتُهَا: 21 — 92 سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ 9 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ	اِذَا	يَغْشٰى ① لا	وَالنَّهَارِ	اِذَا	تَجَلّٰى ② لا	وَمَا	خَلَقَ
क़सम है रात की	जब	वो छा जाए	और दिन की	जब	वो रौशन हो	और उसकी	जिसने पैदा किया

الذَّكَرَ	وَالْاُنْثٰىٓ ③ لا	اِنَّ	سَعْيَكُمْ	لَشَتّٰى ④ ط	فَاَمَّا	مَنْ	اَعْطٰى
नर	और मादा को	बेशक	कोशिश तुम्हारी	अलबत्ता मुख़्तलिफ़ तरह की है	तो रहा वो	जिसने	दिया

وَاتَّقٰى ⑤ لا	وَصَدَّقَ	بِالْحُسْنٰى ⑥ لا	فَسَنُيَسِّرُهٗ	لِلْيُسْرٰى ⑦ ط	وَاَمَّا
और उसने तक़्वा किया	और तस्दीक़ की	भलाई की	पस अनक़रीब हम आसानी देंगे उसे	आसान (रास्ते) की	और रहा वो

مَنْۢ	بَخِلَ	وَاسْتَغْنٰى ⑧ لا	وَكَذَّبَ	بِالْحُسْنٰى ⑨ لا	فَسَنُيَسِّرُهٗ
जिसने	बुख़्ल किया	और उसने बेपरवाई बरती	और उसने झुठलाया	नेकी को	पस अनक़रीब हम आसानी देंगे उसे

لِلْعُسْرٰى ⑩ ط	وَمَا	يُغْنِىْ	عَنْهُ	مَالُهٗٓ	اِذَا	تَرَدّٰى ⑪ ط	اِنَّ
मुश्किल (रास्ते) की	और नहीं	काम आएगा	उसे	माल उसका	जब	वो (जहन्नम में) गिरेगा	बेशक

عَلَيْنَا	لَلْهُدٰى ⑫ صلے	وَاِنَّ	لَنَا	لَلْاٰخِرَةَ	وَالْاُوْلٰى ⑬
हमारे ही ज़िम्मे है	यक़ीनन हिदायत देना	और बेशक	हमारे ही इख़्तियार में है	यक़ीनन आख़िरत	और पहली (दुनिया)

فَاَنْذَرْتُكُمْ	نَارًا	تَلَظّٰى ⑭ ج	لَا يَصْلٰىهَآ	اِلَّا	الْاَشْقَى ⑮ لا	الَّذِىْ
तो डरा दिया मैंने तुम्हें	एक आग से	जो भड़कती है	ना जलेगा उसमें	मगर	निहायत बदबख़्त	वो जिसने

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

كَذَّبَ	وَتَوَلّٰى (16) ط	وَسَيُجَنَّبُهَا	الْاَتْقَى (17) لا	الَّذِىْ	يُؤْتِىْ	مَالَهٗ
झुठलाया	और उसने मुंह मोड़ लिया	और अनक़रीब बचा लिया जाएगा उससे	निहायत परहेज़गार	वो जो	देता है	माल अपना

يَتَزَكّٰى (18) ج	وَمَا	لِاَحَدٍ	عِنْدَهٗ	مِنْ نِّعْمَةٍ	تُجْزٰٓى (19) لا	اِلَّا
कि वो पाक हो	और नहीं	किसी एक के लिए	उसके पास	कोई नेअमत (एहसान)	(जिसका) बदला दिया जाएगा	सिवाए

ابْتِغَآءَ	وَجْهِ	رَبِّهِ	الْاَعْلٰى (20) ج	وَلَسَوْفَ	يَرْضٰى (21) ع
चाहने के लिए	चेहरा	अपने रब का	जो सबसे बुलंद है	और यक़ीनन अनक़रीब	वो राज़ी हो जाएगा

ع 1 21 17

اٰيَاتُهَا: 11 — 93 سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ 11 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى (1) لا	وَالَّيْلِ	اِذَا	سَجٰى (2) لا	مَا	وَدَّعَكَ	رَبُّكَ
क़सम है चाश्त की	और रात की	जब	वो छा जाए	नहीं	छोड़ा आपको	आपके रब ने

وَمَا	قَلٰى (3) ط	وَلَلْاٰخِرَةُ	خَيْرٌ	لَّكَ	مِنَ الْاُوْلٰى (4) ط	وَلَسَوْفَ
और ना	वो नाराज़ हुआ	और यकीनन आख़िरत	बेहतर है	आपके लिए	पहली (दुनिया) से	और यक़ीनन अनक़रीब

يُعْطِيْكَ	رَبُّكَ	فَتَرْضٰى (5) ط	اَلَمْ	يَجِدْكَ	يَتِيْمًا
अता करेगा आपको	रब आपका	तो आप राज़ी हो जाऐंगे	क्या नहीं	उसने पाया आपको	यतीम

فَاٰوٰى (6) ص	وَوَجَدَكَ	ضَآلًّا	فَهَدٰى (7) ص	وَوَجَدَكَ	عَآئِلًا
फिर उसने ठिकाना फ़राहम किया	और उसने पाया आपको	राह भूला	तो उसने रहनुमाई की	और उसने पाया आपको	तंगदस्त

فَاَغْنٰى (8) ط	فَاَمَّا	الْيَتِيْمَ	فَلَا	تَقْهَرْ (9) ط	وَاَمَّا	السَّآئِلَ
तो उसने ग़नी कर दिया	तो रहा	यतीम	पस ना	आप सख़्ती कीजिए (उस पर)	और रहा	सवाली

فَلَا	تَنْهَرْ (10) ط	وَاَمَّا	بِنِعْمَةِ رَبِّكَ	فَحَدِّثْ (11) ع
पस ना	आप झिड़कये (उसे)	और लेकिन	अपने रब की नेअमत को	पस बयान कीजिए

ع 1 11 18

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَاتُهَا: 8 — 94 سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ 12 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ	نَشْرَحْ	لَكَ	صَدْرَكَ ﴿1﴾ لا	وَوَضَعْنَا	عَنْكَ	وِزْرَكَ ﴿2﴾ لا
क्या नहीं	हमने खोल दिया	आपके लिए	सीना आपका	और उतार दिया हमने	आपसे	बोझ आपका
الَّذِيْٓ	اَنْقَضَ	ظَهْرَكَ ﴿3﴾ لا	وَرَفَعْنَا	لَكَ	ذِكْرَكَ ﴿4﴾ ط	فَاِنَّ
वो जिसने	तोड़ दी थी	कमर आपकी	और बुलंद किया हमने	आपके लिए	ज़िक्र आपका	पस यक़ीनन

مَعَ	الْعُسْرِ	يُسْرًا ﴿5﴾ لا	اِنَّ	مَعَ	الْعُسْرِ	يُسْرًا ﴿6﴾ ط	فَاِذَا
साथ	तंगी के	आसानी है	यक़ीनन	साथ	तंगी के	आसानी है	पस जब

ع 1 8 19

فَرَغْتَ	فَانْصَبْ ﴿7﴾ لا	وَاِلٰى رَبِّكَ	فَارْغَبْ ﴿8﴾ ع
फ़ारिग़ हो जाऐं आप	तो मेहनत कीजिए	और तरफ़ अपने रब के	पस रग़बत कीजिए

اٰيَاتُهَا: 8 — 95 سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ 28 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالتِّيْنِ	وَالزَّيْتُوْنِ ﴿1﴾ لا	وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿2﴾ لا	وَهٰذَا	الْبَلَدِ
क़सम है अंजीर की	और ज़ैतून की	और तूरे सीना की	और इस	शहर

الْاَمِيْنِ ﴿3﴾ لا	لَقَدْ	خَلَقْنَا	الْاِنْسَانَ	فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿4﴾ ز	ثُمَّ
अमन वाले की	अलबत्ता तहक़ीक़	पैदा किया हमने	इंसान को	बेहतरीन साख़्त में	फिर

رَدَدْنٰهُ	اَسْفَلَ	سٰفِلِيْنَ ﴿5﴾ لا	اِلَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا
लौटा दिया हमने उसे	सबसे ज़्यादा निचला	निचलों से	सिवाए	उनके जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए
الصّٰلِحٰتِ	فَلَهُمْ	اَجْرٌ	غَيْرُ	مَمْنُوْنٍ ﴿6﴾ ط	فَمَا	يُكَذِّبُكَ
नेक	तो उनके लिए	अजर है	ना	ख़त्म होने वाला	तो क्या (आमादा करता है)	झुठलाने पर तुझे

© AL HUDA INT WELFARE FOUNDATION

ع 1 8 20

بَعْدُ	بِالدِّيْنِ (7) ط	اَلَيْسَ	اللّٰهُ	بِاَحْكَمِ	الْحٰكِمِيْنَ (8) ع
बाद इस के	बदले (के दिन) को	क्या नहीं है	अल्लाह	बड़ा हाकिम	सब हाकिमों से

اٰيَاتُهَا: 19 — 96 سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ 1 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَاْ	بِاسْمِ	رَبِّكَ	الَّذِیْ	خَلَقَ (1) ج	خَلَقَ	الْاِنْسَانَ	مِنْ عَلَقٍ (2) ج
पढ़िए	नाम से	अपने रब के	वो जिसने	पैदा किया	उसने पैदा किया	इंसान को	जमे हुए ख़ून से

اِقْرَاْ	وَ رَبُّكَ	الْاَكْرَمُ (3) لا	الَّذِیْ	عَلَّمَ	بِالْقَلَمِ (4) لا	عَلَّمَ	الْاِنْسَانَ
पढ़िए	और रब आपका	सबसे ज़्यादा करम वाला है	वो जिसने	सिखाया	साथ क़लम के	उसने सिखाया	इंसान को

مَا	لَمْ	يَعْلَمْ (5) ط	كَلَّاۤ	اِنَّ	الْاِنْسَانَ	لَيَطْغٰۤى (6) لا	اَنْ
जो	नहीं	वो जानता था	हरगिज़ नहीं	बेशक	इंसान	अलबत्ता सरकशी करता है	कि

رَّاٰهُ	اسْتَغْنٰى (7) ط	اِنَّ	اِلٰى رَبِّكَ	الرُّجْعٰى (8) ط	اَرَءَيْتَ	الَّذِیْ
वो देखता है ख़ुद को	बेनियाज़	बेशक	तरफ़ आपके रब के	पलटना है	क्या देखा आपने	उस शख़्स को जो

يَنْهٰى (9) لا	عَبْدًا	اِذَا	صَلّٰى (10) ط	اَرَءَيْتَ	اِنْ	كَانَ
रोकता है	एक बंदे को	जब	वो नमाज़ पढ़ता है	क्या देखा आपने	अगर	हो वो

عَلَى الْهُدٰۤى (11) لا	اَوْ	اَمَرَ	بِالتَّقْوٰى (12) ط	اَرَءَيْتَ	اِنْ	كَذَّبَ
हिदायत पर	या	वो हुक्म देता हो	तक़्वा का	क्या देखा आपने	अगर	उसने झुठलाया

وَتَوَلّٰى (13) ط	اَلَمْ	يَعْلَمْ	بِاَنَّ	اللّٰهَ	يَرٰى (14) ط	كَلَّا	لَئِنْ
और उसने मुंह मोड़ा	क्या नहीं	वो जानता	कि बेशक	अल्लाह	देख रहा है	हरगिज़ नहीं	अलबत्ता अगर

لَّمْ	يَنْتَهِ ۙ	لَنَسْفَعًا	بِالنَّاصِيَةِ (15) لا	نَاصِيَةٍ	كَاذِبَةٍ
ना	वो बाज़ आया	तो हम ज़रूर घसीटेंगे (उसे)	पेशानी के (बालों से)	पेशानी	जो झूठी है

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

خَاطِئَةٍ ۚ ⑯	فَلْيَدْعُ	نَادِيَهٗ ۙ ⑰	سَنَدْعُ	الزَّبَانِيَةَ ۙ ⑱
ख़ताकार है	पस चाहिए कि वो पुकारे	अपनी मजलिस को	अनक़रीब हम बुला लेंगे	दोज़ख़ के फ़रिश्तों को

ع 19 / 1 — السجدة 14 — 21

كَلَّا ؕ	لَا تُطِعْهُ	وَاسْجُدْ	وَاقْتَرِبْ ۩ ⑲
हरगिज़ नहीं	ना आप इताअत कीजिए उसकी	और सज्दा कीजिए	और क़ुर्ब हासिल कीजिए

اٰيَاتُهَا: 5 — 97 سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ 25 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ	اَنْزَلْنٰهُ	فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚۖ ①	وَمَآ	اَدْرٰىكَ	مَا
बेशक हम	नाज़िल किया हमने उसे	लैलतुल क़द्र में	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ؕ ②	لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ	خَيْرٌ	مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ؕ ③	تَنَزَّلُ
लैलतुल क़द्र	लैलतुल क़द्र	बेहतर है	हज़ार महीनों से	उतरते हैं

الْمَلٰٓئِكَةُ	وَالرُّوْحُ	فِيْهَا	بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ	مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۛ ④
फ़रिश्ते	और रूह (जिब्रील)	उसमें	अपने रब के इज़्न से	हर काम के लिए

سَلٰمٌ ۛ قف	هِيَ	حَتّٰى	مَطْلَعِ	الْفَجْرِ ع ⑤
सलामती है	वो	यहाँ तक कि	तुलूअ होजाए	फ़ज्र

ع 5 / 1 — الثلثة معانقة 18 — 22

اٰيَاتُهَا: 8 — 98 سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ 100 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ	يَكُنِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	وَالْمُشْرِكِيْنَ
नहीं	थे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	अहले किताब में से	और मुशरिकीन में से

مُنْفَكِّيْنَ	حَتّٰى	تَاْتِيَهُمُ	الْبَيِّنَةُ ۙ ①	رَسُوْلٌ	مِّنَ اللّٰهِ
बाज़ आने वाले	यहाँ तक कि	आ जाए उनके पास	वाज़ेह दलील	एक रसूल	अल्लाह की तरफ़ से

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَتْلُوْا	صُحُفًا	مُّطَهَّرَةً ② لا	فِيْهَا	كُتُبٌ	قَيِّمَةٌ ③ ط	وَمَا	تَفَرَّقَ
जो पढ़ता है	सहीफ़े	पाकीज़ा	उसमें	तहरीरें हैं	दुरुस्त	और नहीं	तफ़रक़ा किया

الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	اِلَّا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَتْهُمُ	الْبَيِّنَةُ ④ ط
उन लोगों ने जो	दिए गए	किताब	मगर	बाद इसके	जो	आई उनके पास	खुली दलील

وَمَآ	اُمِرُوْٓا	اِلَّا	لِيَعْبُدُوا	اللّٰهَ	مُخْلِصِيْنَ	لَهُ	الدِّيْنَ ۙ
और नहीं	वो हुक्म दिए गए थे	मगर	ये कि वो इबादत करें	अल्लाह की	ख़ालिस करने वाले	उसके लिए	दीन को

حُنَفَآءَ	وَيُقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَيُؤْتُوا	الزَّكٰوةَ	وَذٰلِكَ	دِيْنُ
यकसू होकर	और वो क़ायम करें	नमाज़	और वो अदा करें	ज़कात	और ये है	दीन

الْقَيِّمَةِ ⑤ ط	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	وَالْمُشْرِكِيْنَ
दुरुस्त	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	अहले किताब में से	और मुशरिकीन

فِيْ نَارِ	جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ط	اُولٰٓئِكَ	هُمْ	شَرُّ	الْبَرِيَّةِ ⑥ ط
आग में होंगे	जहन्नम की	हमेशा रहने वाले	उसमें	यही लोग हैं	वो	बदतरीन	मख़्लूक़

اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ لا	اُولٰٓئِكَ	هُمْ	خَيْرُ
बेशक	वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	यही लोग हैं	वो	बेहतरीन

الْبَرِيَّةِ ⑦ ط	جَزَآؤُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ	جَنّٰتُ	عَدْنٍ	تَجْرِيْ
मख़्लूक़	बदला उनका	पास है	उनके रब के	बाग़ात	हमेशगी के	बहती हैं

مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ط	رَضِيَ	اللّٰهُ
उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उन में	हमेशा-हमेशा	राज़ी हो गया	अल्लाह

عَنْهُمْ	وَرَضُوْا	عَنْهُ ط	ذٰلِكَ	لِمَنْ	خَشِيَ	رَبَّهٗ ⑧ ع
उनसे	और वो राज़ी हो गए	उससे	ये	उसके लिए जो	डर गया	अपने रब से

ع 1 8 23

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَاتُهَا: 8 — 99 سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ 93 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا	زُلْزِلَتِ	الْاَرْضُ	زِلْزَالَهَا ①	وَاَخْرَجَتِ	الْاَرْضُ	اَثْقَالَهَا ②
जब	हिला दी जाएगी	ज़मीन	हिला दिया जाना उसका	और निकालेगी	ज़मीन	बोझ अपने

وَقَالَ	الْاِنْسَانُ	مَا	لَهَا ③	يَوْمَئِذٍ	تُحَدِّثُ	اَخْبَارَهَا ④
और कहेगा	इंसान	क्या है	उसे	उस दिन	वो बयान करेगी	ख़बरें अपनी

بِاَنَّ	رَبَّكَ	اَوْحٰى	لَهَا ⑤	يَوْمَئِذٍ	يَّصْدُرُ	النَّاسُ	اَشْتَاتًا
क्योंकि	आपके रब ने	वही की	उसे	उस दिन	लौटेंगे	लोग	अलग-अलग होकर

لِّيُرَوْا	اَعْمَالَهُمْ ⑥	فَمَنْ	يَّعْمَلْ	مِثْقَالَ	ذَرَّةٍ	خَيْرًا
ताकि वो दिखाए जाऐं	आमाल अपने	तो जो कोई	अमल करेगा	वज़न बराबर	ज़र्रे के	भलाई के

1 ع 8 24

يَّرَهٗ ⑦	وَمَنْ	يَّعْمَلْ	مِثْقَالَ	ذَرَّةٍ	شَرًّا	يَّرَهٗ ⑧
वो देख लेगा उसे	और जो कोई	अमल करेगा	वज़न बराबर	ज़र्रे के	बुराई के	वो देख लेगा उसे

اٰيَاتُهَا: 11 — 100 سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ 14 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعٰدِيٰتِ	ضَبْحًا ①	فَالْمُوْرِيٰتِ	قَدْحًا ②	فَالْمُغِيْرٰتِ
क़सम है दौड़ने वालों की	हांपते हुए	फिर चिंगारी निकालने वालों की	सुम मार कर	फिर हमला करने वालों की

صُبْحًا ③	فَاَثَرْنَ	بِهٖ	نَقْعًا ④	فَوَسَطْنَ	بِهٖ
सुबह सवेरे	फिर वो उड़ाते हैं	साथ उसके	ग़ुबार को	फिर वो दर्मियान में घुस जाते हैं	साथ उसके

جَمْعًا ⑤	اِنَّ	الْاِنْسَانَ	لِرَبِّهٖ	لَكَنُوْدٌ ⑥	وَاِنَّهٗ	عَلٰى ذٰلِكَ
जमाअत में	यक़ीनन	इन्सान	अपने रब का	यक़ीनन बड़ा नाशुक्रा है	और बेशक वो	ऊपर इसके

اَفَلَا	لَشَدِيۡدٌ ؕ ⑧	الۡخَيۡرِ	لِحُبِّ	وَاِنَّهٗ	لَشَهِيۡدٌ ۚ ⑦
क्या भला नहीं	यक़ीनन शदीद है	माल की	मोहब्बत में	और बेशक वो	अलबत्ता (ख़ुद) गवाह है

مَا	وَحُصِّلَ	فِى الۡقُبُوۡرِ ۙ ⑨	مَا	بُعۡثِرَ	اِذَا	يَعۡلَمُ
जो	और हासिल कर लिया जाएगा	क़ब्रों में है	जो	निकाल लिया जाएगा	जब	वो जानता

لَّخَبِيۡرٌ ⑪ ع	يَوۡمَئِذٍ	بِهِمۡ	رَبَّهُمۡ	اِنَّ	فِى الصُّدُوۡرِ ۙ ⑩	ع 1 11 25
यक़ीनन बहुत बाख़बर होगा	उस दिन	उनके बारे में	रब उनका	बेशक	सीनों में है	

رُكُوۡعُهَا: 1 | 30 سُوۡرَةُ الۡقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ 101 | اٰيَاتُهَا: 11

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

الۡقَارِعَةُ ؕ ③	مَا	اَدۡرٰٮكَ	وَمَاۤ	الۡقَارِعَةُ ۚ ②	مَا	اَلۡقَارِعَةُ ۙ ①
खटखटाने वाली	कि क्या है वो	बताए आपको	और क्या चीज़	खटखटाने वाली	क्या है वो	खटखटाने वाली

الۡجِبَالُ	وَتَكُوۡنُ	الۡمَبۡثُوۡثِ ۙ ④	كَالۡفَرَاشِ	النَّاسُ	يَكُوۡنُ	يَوۡمَ
पहाड़	और होजाऐंगे	बिखरे हुए	परवानों की तरह	लोग	हो जाऐंगे	जिस दिन

فَهُوَ	مَوَازِيۡنُهٗ ۙ ⑥	ثَقُلَتۡ	مَنۡ	فَاَمَّا	الۡمَنۡفُوۡشِ ؕ ⑤	كَالۡعِهۡنِ
तो वो	पलड़े उसके	भारी हुए	वो जो	तो रहा	धुंकी हुई	रंगीन रूई की तरह

فَاُمُّهٗ	مَوَازِيۡنُهٗ ۙ ⑧	خَفَّتۡ	مَنۡ	وَاَمَّا	رَّاضِيَةٍ ؕ ⑦	فِىۡ عِيۡشَةٍ
तो उसकी मां (ठिकाना)	पलड़े उसके	हल्के हुए	वो जो	और रहा	पसंदीदा	ज़िंदगी में होगा

حَامِيَةٌ ⑪ ع	نَارٌ	مَا هِيَهۡ ؕ ⑩	اَدۡرٰٮكَ	وَمَاۤ	هَاوِيَةٌ ؕ ⑨	ع 1 11 26
भड़कती हुई	आग है	क्या है वो	बताए आपको	और क्या चीज़	हाविया (जहन्नम) होगी	

رُكُوۡعُهَا: 1 | 16 سُوۡرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ 102 | اٰيَاتُهَا: 8

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَوْفَ	كَلَّا	الْمَقَابِرَ ②	زُرْتُمُ	حَتّٰى	التَّكَاثُرُ ①	اَلْهٰكُمُ
अनक़रीब	हरगिज़ नहीं	क़ब्रों को	जा पहुंचे तुम	यहां तक कि	कसरत की तलब ने	ग़ाफ़िल कर दिया तुम्हें

تَعْلَمُوْنَ	لَوْ	كَلَّا	تَعْلَمُوْنَ ④	سَوْفَ	كَلَّا	ثُمَّ	تَعْلَمُوْنَ ③
तुम जान लेते	काश	हरगिज़ नहीं	तुम जान लोगे	अनक़रीब	हरगिज़ नहीं	फिर	तुम जान लोगे

عَيْنَ	لَتَرَوُنَّهَا	ثُمَّ	الْجَحِيْمَ ⑥	لَتَرَوُنَّ	الْيَقِيْنِ ⑤	عِلْمَ
आंख से	अलबत्ता तुम ज़रूर देखोगे उसे	फिर	जहन्नम को	अलबत्ता तुम ज़रूर देखोगे	यक़ीन का	जानना

عَنِ النَّعِيْمِ ⑧ ع	يَوْمَئِذٍ	لَتُسْئَلُنَّ	ثُمَّ	الْيَقِيْنِ ⑦
नेअमतों के बारे में	उस दिन	अलबत्ता तुम ज़रूर पूछे जाओगे	फिर	यक़ीन की

ع 1 8 27

رُكُوْعُهَا: 1 — 13 سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ 103 — اٰيَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِلَّا	لَفِيْ خُسْرٍ ②	الْاِنْسَانَ	اِنَّ	وَالْعَصْرِ ①
ईमान लाए	उन लोगों के जो	सिवाय	यक़ीनन ख़सारे में है	इन्सान	बेशक	क़सम है ज़माने की

بِالصَّبْرِ ③ ع	وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ	وَتَوَاصَوْا	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا
सब्र की	और एक दूसरे को तलक़ीन की	हक़ की	और एक दूसरे को तलक़ीन की	नेक	और उन्होंने अमल किए

ع 1 3 28

رُكُوْعُهَا: 1 — 32 سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ 104 — اٰيَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مَالًا	جَمَعَ	الَّذِيْ	لُّمَزَةِ ①	هُمَزَةٍ	لِّكُلِّ	وَيْلٌ
माल	जमा किया	वो जिसने	ग़ीबत करने वाले के	ऐब लगाने वाले	वास्ते हर	हलाकत है

كَلَّا	اَخْلَدَهٗ ③	مَالَهٗ	اَنَّ	يَحْسَبُ	وَعَدَّدَهٗ ②
हरगिज़ नहीं	हमेशगी बख़्शेगा उसे	माल उसका	कि बेशक	वो समझता है	और उसने गिन-गिन कर रखा उसे

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَيُنْۢبَذَنَّ	فِي الْحُطَمَةِ ④	وَمَآ	أَدْرٰىكَ	مَا	الْحُطَمَةُ ⑤ ط
अलबत्ता वो ज़रूर डाला जाएगा	हुतामा में	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	हुतामा

نَارُ	اللّٰهِ	الْمُوْقَدَةُ ⑥ لا	الَّتِيْ	تَطَّلِعُ	عَلَى الْأَفْئِدَةِ ⑦ ط
आग है	अल्लाह की	भड़काई हुई	वो जो	चढ़ आती है	दिलों पर

إِنَّهَا	عَلَيْهِمْ	مُّؤْصَدَةٌ ⑧ لا	فِيْ عَمَدٍ	مُّمَدَّدَةٍ ⑨ ع
बेशक वो	उन पर	बंद की हुई है	सुतूनों में	लम्बे-लम्बे

ع 1 9 29

آيَاتُهَا: 5 — 105 سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ 19 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أَلَمْ	تَرَ	كَيْفَ	فَعَلَ	رَبُّكَ	بِأَصْحٰبِ الْفِيْلِ ① ط
क्या नहीं	आपने देखा	किस तरह	किया	आपके रब ने	हाथी वालों के साथ

أَلَمْ	يَجْعَلْ	كَيْدَهُمْ	فِيْ تَضْلِيْلٍ ② لا	وَّأَرْسَلَ	عَلَيْهِمْ
क्या नहीं	उसने कर दिया था	उनकी चाल को	बेकार/अकारत	और उसने भेजे	उन पर

طَيْرًا	أَبَابِيْلَ ③ لا	تَرْمِيْهِمْ	بِحِجَارَةٍ	مِّنْ سِجِّيْلٍ ④ صلے
परिंदे	झुंड के झुंड	जो फेंकते थे उन पर	पत्थर	कंकर की (क़िस्म) के

فَجَعَلَهُمْ	كَعَصْفٍ	مَّأْكُوْلٍ ⑤ ع
तो उसने कर दिया उन्हें	भूसे की तरह	खाए हुए

ع 1 5 30

آيَاتُهَا: 4 — 106 سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَّكِّيَّةٌ 29 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِإِيْلٰفِ	قُرَيْشٍ ① لا	إٖلٰفِهِمْ	رِحْلَةَ	الشِّتَآءِ	وَالصَّيْفِ ② ج
मानूस करने के लिए	क़ुरैश को	मानूस करना उन्हें	सफ़र से	सर्दी के	और गर्मी के

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَطْعَمَهُمْ	الَّذِیْٓ	الْبَیْتِ ۙ ③	هٰذَا	رَبَّ	فَلْیَعْبُدُوْا
खिलाया उन्हें	जिसने	घर के	उस	रब की	पस चाहिए कि वो इबादत करें

ع 1 4 31

مِّنْ خَوْفٍ ع ④	وَّاٰمَنَهُمْ	مِّنْ جُوْعٍ ۙ
ख़ौफ़ से	और उसने अमन दिया उन्हें	भूख में

رُكُوْعُهَا: 1 — 17 سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ 107 — اٰيَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الَّذِیْ	فَذٰلِكَ	بِالدِّیْنِ ۗ ①	یُكَذِّبُ	الَّذِیْ	اَرَءَیْتَ
वो है जो	पस ये	बदले (के दिन) को	झुठलाता है	उस शख़्स को जो	क्या देखा आपने

الْمِسْكِیْنِ ۗ ③	عَلٰى طَعَامِ	یَحُضُّ	وَلَا	الْیَتِیْمَ ۙ ②	یَدُعُّ
मिस्कीन के	खाना खिलाने पर	वो रग़बत दिलाता	और नहीं	यतीम को	धक्के देता है

سَاهُوْنَ ۙ ⑤	عَنْ صَلَاتِهِمْ	هُمْ	الَّذِیْنَ	لِّلْمُصَلِّیْنَ ۙ ④	فَوَیْلٌ
ग़ाफ़िल हैं	अपनी नमाज़ों से	वो	वो जो	उन नमाज़ियों के लिए	पस हलाकत है

ع 1 7 32

الْمَاعُوْنَ ع ⑦	وَیَمْنَعُوْنَ	یُرَآءُوْنَ ۙ ⑥	هُمْ	الَّذِیْنَ
इस्तिमाल की मामूली चीजें	और वो रोकते हैं	वो रियाकारी करते हैं	वो	वो लोग जो

رُكُوْعُهَا: 1 — 15 سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ 108 — اٰيَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَانْحَرْ ۗ ②	لِرَبِّكَ	فَصَلِّ	الْكَوْثَرَ ۗ ①	اَعْطَیْنٰكَ	اِنَّآ
और क़ुर्बानी कीजिए	अपने रब के लिए	पस नमाज़ पढ़िए	कौसर	अता की हमने आपको	बेशक हम

ع 1 3 33

الْاَبْتَرُ ع ③	هُوَ	شَانِئَكَ	اِنَّ
जड़ कटा है	वो ही	दुश्मन आपका	बेशक

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

آيَاتُهَا: 6 — سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ 109 18 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ	يٰٓاَيُّهَا	الْكٰفِرُوْنَ ① ۙ	لَآ اَعْبُدُ	مَا	تَعْبُدُوْنَ ② ۙ	وَلَآ	اَنْتُمْ
कह दीजिए	ऐ	काफ़िरो	नहीं मैं इबादत करता	जिसकी	तुम इबादत करते हो	और ना	तुम

عٰبِدُوْنَ	مَآ	اَعْبُدُ ③ ۚ	وَلَآ	اَنَا	عَابِدٌ	مَّا	عَبَدْتُّمْ ④ ۙ
इबादत करने वाले हो	जिसकी	मैं इबादत करता हूं	और ना	मैं	इबादत करने वाला हूं	जिसकी	इबादत की तुमने

وَلَآ	اَنْتُمْ	عٰبِدُوْنَ	مَآ	اَعْبُدُ ⑤ ؕ	لَكُمْ	دِيْنُكُمْ	وَلِيَ	دِيْنِ ⑥ ع
और ना	तुम	इबादत करने वाले हो	जिसकी	मैं इबादत करता हूं	तुम्हारे लिए	तुम्हारा दीन	और मेरे लिए	मेरा दीन

ع 1 6 34

آيَاتُهَا: 3 — سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ 110 114 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا	جَآءَ	نَصْرُ	اللّٰهِ	وَالْفَتْحُ ① ۙ	وَرَاَيْتَ	النَّاسَ
जब	आ जाए	मदद	अल्लाह की	और फ़तह	और आप देखें	लोगों को

يَدْخُلُوْنَ	فِيْ دِيْنِ	اللّٰهِ	اَفْوَاجًا ② ۙ	فَسَبِّحْ	بِحَمْدِ
वो दाख़िल हो रहे हैं	दीन में	अल्लाह के	फ़ौज दर फ़ौज	तो तस्बीह कीजिए	साथ हम्द के

رَبِّكَ	وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	تَوَّابًا ③ ع
अपने रब की	और बख़्शिश मांगिए उससे	बेशक वो	है वो	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला

ع 1 3 35 وقف النبي صلى الله عليه وسلم

آيَاتُهَا: 5 — سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ 111 6 — رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ	يَدَآ	اَبِيْ لَهَبٍ	وَّتَبَّ ① ؕ	مَآ	اَغْنٰى	عَنْهُ	مَالُهٗ
टूट गए	दोनों हाथ	अबू लहब के	और वो हलाक हुआ	ना	काम आया	उसे	माल उसका

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	كَسَبَ ؕ (2)	سَيَصْلٰى	نَارًا	ذَاتَ لَهَبٍ ۚۖ (3)	وَّامْرَاَتُهٗ ؕ
और जो	उसने कमाया	अनक़रीब वो जलेगा	आग में	शोले वाली	और उसकी बीवी

ع 1 5 36

حَمَّالَةَ	الْحَطَبِ ۚ (4)	فِيْ جِيْدِهَا	حَبْلٌ	مِّنْ مَّسَدٍ (5) ع
उठाने वाली	लकड़ी के गट्ठे को	उसकी गर्दन में	रस्सी होगी	बटी हुई

اٰيَاتُهَا: 4 سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ 112 22 رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ	هُوَ	اللّٰهُ	اَحَدٌ ۚ (1)	اَللّٰهُ	الصَّمَدُ ۚ (2)	لَمْ	يَلِدْ ۙ
कह दीजिए	वो	अल्लाह	एक है	अल्लाह	बेनियाज़ है	ना	उसने जना

ع 1 4 37

وَلَمْ	يُوْلَدْ ۙ (3)	وَلَمْ	يَكُنْ	لَّهٗ	كُفُوًا	اَحَدٌ (4) ع
और ना	वो जना गया	और नहीं	है	उसके लिए	बराबर का	कोई एक भी

اٰيَاتُهَا: 5 سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ 113 20 رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ	اَعُوْذُ	بِرَبِّ	الْفَلَقِ ۙ (1)	مِنْ شَرِّ	مَا	خَلَقَ ۙ (2)
कह दीजिए	मैं पनाह लेता हूं	रब की	सुबह के	हर उस चीज़ के शर से	जो	उसने पैदा की

وَمِنْ شَرِّ	غَاسِقٍ	اِذَا	وَقَبَ ۙ (3)	وَمِنْ شَرِّ	النَّفّٰثٰتِ
और शर से	अंधेरी रात के	जब	वो फैल जाए	और शर से	फूंखने वालियों के

ع 1 5 38

فِي الْعُقَدِ ۙ (4)	وَمِنْ شَرِّ	حَاسِدٍ	اِذَا	حَسَدَ (5) ع
गिरहों में	और शर से	हासिद के	जब	वो हसद करे

اٰيَاتُهَا: 6 سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ 114 21 رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

© AL HUDA INT EDUCATIONL WEL FARE FOUNDATION

قُلْ	اَعُوْذُ	بِرَبِّ	النَّاسِ ⓵ لا	مَلِكِ	النَّاسِ ⓶ لا
कह दीजिए	मैं पनाह लेता हूं	रब की	इंसानों के	बादशाह की	इंसानों के

اِلٰهِ	النَّاسِ ⓷ لا	مِنْ شَرِّ	الْوَسْوَاسِ ۙ	الْخَنَّاسِ ⓸ صلى	الَّذِىْ
इलाह की	इन्सानों के	शर से	वसवसा डालने वाले के	बार बार पलट कर आने वाले के	वो जो

يُوَسْوِسُ	فِىْ صُدُوْرِ	النَّاسِ ⓹ لا	مِنَ الْجِنَّةِ	وَالنَّاسِ ⓺ ع
वसवसा डालता है	सीनों में	लोगों के	जिन्नों में से	और इंसानों में से

ع 1 6 39

© AL HUDA INT RNATIONL WEL RE FOUNDATION